भजनामृत

गीताप्रेस, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

मूल्य पचहत्तर पैसे

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

भजनामृत
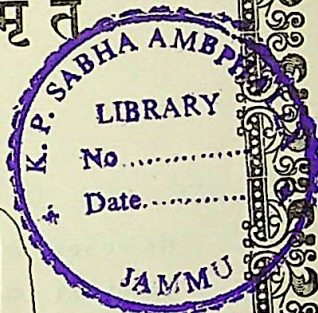
संकलनकर्त्ता

ईश्वरीप्रसाद गोयनका

दो शब्द

भगवन्नामकी महिमा अमित है। इस दृष्टिसे भक्तोंके लिये भजनोंका महत्त्व अमृत-तुल्य है। अपने प्रियका नाम जपते-जपते प्रेमीका मन अनेक प्रकारकी भाव-तरङ्गोंसे अनुप्राणित हो उठता है। प्रस्तुत संकलनमें इन गम्भीर भाव-तरङ्गोंकी माला पिरोनेका प्रयास किया गया है। अनेक रसिक सन्तोंकी वाणियोंकी सम्पूर्ण सहज माधुरी समेटकर रखनेकी चेष्टा करना तो दुराशा ही है, परन्तु उस मिठासकी थोड़ी-बहुत अनुभूति इस संग्रहद्वारा हो—ऐसी हमारी चेष्टा रही है।

'भजनामृत' के भजनोंको पाँच भागोंमें विभक्त किया गया है। 'नाम-महिमा'में भगवन्नामका महत्त्व दरसाया गया है। 'अभिलाषा'के अन्तर्गत भगवत्प्रेमी सन्तोंकी सुमधुर कल्याणमयी कामनाओंका दिग्दर्शन करानेवाले पदोंकी छटा भाव-दृष्टिके सामने आती है। 'निवेदन' शीर्षकके अन्तर्गत विनम्र भावोंका चयन हुआ है। इसी प्रकार भगवद्वियोगकी पीड़ाका चित्रण 'वियोग' शीर्षकके अन्तर्गत पदोंमें है। 'लीलागान'में भगवल्लीलाकी मनमोहिनी झाँकी है तथा अन्तमें 'विविध' शीर्षकके द्वारा सन्तोंके अन्यान्य भावोंकी झलक दिखलानेवाली वाणीको लिया गया है।

आशा है, पाठकोंको प्रस्तुत संकलन रसानुभूति करानेमें समर्थ होगा । संकीर्तन-प्रेमियोंको तो विभिन्न राग-रागिनियोंमें आबद्ध इन पदोंको एक स्थानपर पाकर विशेष लाभ होगा । भगवत्प्रेमी समाज इस संकलनका अधिकाधिक लाभ उठावे, हमारी यही कामना है ।

विनीत

कलकत्ता,

गीता-जयन्ती, संवत् २०३२ ईश्वरीप्रसाद गोयनका

पदानुक्रम

श्रीहरिः

भजनामृत

नाम-महिमा

(१)

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।
श्यामसुन्दर मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ॥ टेर ॥
तूँ ही नटवर, तूँ ही नागर, तूँ ही बाल मुकुन्दा ॥ १ ॥
सब देवनमें कृष्ण बड़े हैं, ज्यूँ तारा बिच चन्दा ॥ २ ॥
सब सखियन में राधाजी बड़ी हैं, ज्यूँ नदियाँ बीच गंगा ॥ ३ ॥
ध्रुव तारे, प्रह्लाद उबारे, नरसिंह रूप धरन्ता ॥ ४ ॥
कालीदह में नाग ज्यों नाथो, फण-फण निरत करन्ता ॥ ५ ॥
वृन्दावन में रास रचायो, नाचत बाल मुकुन्दा ॥ ६ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम का फन्दा ॥ ७ ॥

(२)

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम ॥ टेर ॥
एक हृदय में प्रेम बढ़ावै, एक ताप सन्ताप मिटावै।
दोनू सुख के सागर हैं, दोनू पूरण काम ॥ १ ॥
माखन ब्रज में एक चुरावै, एक बेर भिलनी का खावै।
प्रेम भाव के भरे अनोखे, दोनू के हैं काम ॥ २ ॥
एक पापी कंस संहारे, एक दुष्ट रावण को मारे।
दोनू दीन के दुःख हरता हैं, दोनू बल के धाम ॥ ३ ॥
एक राधिका के संग राजे,एक जानकी संग विराजे।
चाहे सीताराम कहो, चाहे राधेश्याम ॥ ४ ॥

दोनू हैं घट-घट के वासी, दोनू हैं आनन्द प्रकासी।
राम श्याम के दिव्य भजन ते, मिलता है विश्राम ॥ ५ ॥

(३)

आवो भाई सब मिल बोलो राम-राम-राम ॥ टेर ॥
गर्भवास में कौल किया था, समरूँगा यह बोल दिया था,
बाहर आकर भूल्यो हरि को नाम-नाम-नाम ॥ १ ॥
मात पिता बन्धु सुत दारा, स्वार्थ है जब तू लगता प्यारा,
बात न पूछे जब हो जावे बे काम-काम-काम ॥ २ ॥
जिसके खातिर पाप कमावै, धरणी-धन यहाँ ही रह जावै,
देख नजर कर संग न चालै ताम-ताम-ताम ॥ ३ ॥
समय अमोलक बीता जावै, बार-बार नर देह न पावै,
सुफल बना सुमिरण कर आठूँ याम-याम-याम ॥ ४ ॥
सत कर्मों की पूँजी कर ले, राम नाम की बालद भर ले,
जिह्वा तेरे बस की, न लागै दाम-दाम-दाम ॥ ५ ॥
भक्ति भाव की नाव बना ले, सत्य धर्म केवट बैठा ले,
देवकीनन्दन जाना जो निज धाम-धाम-धाम ॥ ६ ॥

(४)

हे पिंजरे की ये मैना, भजन कर ले राम का,
भजन कर ले राम का, भजन कर ले श्याम का ॥ टेर ॥
राम नाम अनमोल रतन है, राम राम तूँ कहना,
भवसागर से पार होवे तो, नाम हरिका लेना ॥ १ ॥
भाई-बन्धु कुटुम्ब कबीलो, कोई किसी को है ना,
मतलब का सब खेल जगत में, नहीं किसी को रहना ॥ २ ॥
कोड़ी-कोड़ी माया जोड़ी, कभी किसी को देई ना,
सब सम्पत्ति तेरी यहीं रहेगी, नहीं कछु लेना-देना ॥ ३ ॥

(५)

हरी नाम सुमर सुखधाम, जगत में जिवना दो दिन का ॥ टेर ॥
सुन्दर काया देख लुभाया, गरब करै तन का।
गिर गई देह बिखर गई काया, ज्यूँ माला मनका ॥ १ ॥
सुन्दर नारी लगै पियारी, मौज करै मन का।
काल बली का लाग्या तमंचा, भूल जाय ठन का ॥ २ ॥
झूठ कपट कर माया जोड़ी, गरब करै धन का।
सब ही छोड़कर चल्या मुसाफिर बास हुआ बन का ॥ ३ ॥
यो संसार स्वप्न की माया, मेला पल छिन का।
ब्रह्मानन्द भजन कर बन्दे, नाथ निरंजन का ॥ ४ ॥

(६)

भज ले क्यूँ न राधे कृष्णा, फेर पछताओगे ॥ टेर ॥
जिन तोकु पैदा किया, उसका नाम कदे नहीं लिया।
ऐसी नर देही बन्दा फेर कब पावोगे ॥ १ ॥
तिरिया और कुटुम्ब के खातिर, पच-पच के मर जावोगे।
माया थारै संग न चाले रीते हाथ जावोगे ॥ २ ॥
एक दिन ऐसा होगा बन्दा, यम लेने को आवेंगे।
पूछेंगे हिसाब तेरा फेर क्या बतावोगे ॥ ३ ॥
सूर के किशोर बन्दा छोड़ दे माया का फन्दा।
हरि के भजन कर पार लंघ जावोगे ॥ ४ ॥

(७)

दिन नीके बीते जाते हैं ॥ टेर ॥
सुमिरन कर ले राम नाम, तज बिषय भोग सब और काम।
तेरे संग न चाले इक छदाम, जो देते हैं सो पाते हैं ॥ १ ॥

लख चौरासी भोग के आया, बड़े भाग मानस तन पाया।
उस पर भी नहीं करी कमाई, अन्त समय पछिताते हैं ॥ २ ॥
कौन तुम्हारा कुटुम्ब परिवारा, किसके हो तुम कौन तुम्हारा।
किसके बल हरि नाम बिसारा, सब जीते जी के नाते हैं ॥ ३ ॥
जो तू लाग्यो विषय विलासा, मूरख फँस गयो मोह की फाँसा।
क्या करता श्वासन की आशा, गये श्वास नहीं आते हैं ॥ ४ ॥
सच्चे मनसे नाम सुमिर ले, बन आवे तो सुकृत कर ले।
साधु पुरुष की संगति कर ले, दास कबीरा गाते हैं ॥ ५ ॥

(८)

राम गुण गायो नहीं आय करके, जम से कहोगे क्या जाय करके॥टेर॥
गर्भ में देखी नरक निसानी, तब तू कौल किया था प्रानी।
भजन करूँगा चित्त लाय करके ॥ १ ॥
बालपने में लाड लडायो, मात पिता तने पालणे झुलायो।
समय गमायो खेल खाय करके ॥ २ ॥
तरुण भयो तिरिया संग राच्यो, नट मर्कट ज्यों निशदिन नाच्यो।
माया में रह्यो रे भरमाय करके ॥ ३ ॥
जीवन बीत बुढ़ापो आवे, इन्द्री सब शीतल होय जावे।
तब रोवोगे पछताय करके ॥ ४ ॥
वेद पुरान संत यों गावे, बार बार नर देही न पावे।
देवकी तिरोगे हरि गाय करके ॥ ५ ॥

(९)

पायोजी म्हें तो राम रतन धन पायो ॥ टेर ॥
बस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपाकर अपनायो ॥
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो ॥
खायो न खरच चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो ॥

सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, हरस हरस जश गायो ॥

(१०)

लेल्योजी लेल्योजी थे, लेल्यो हरि को नाम ।
मैं व्योपारी राम-नाम का, प्रेमनगर है गाम ॥ टेर ॥
मैं प्रेमनगर से आया, हरि नाम का सौदा ल्याया ।
च्यार खूँट में चली दलाली, आढ़त चारूँ धाम ॥१॥मैं…
सोना-चाँदी कछु नहीं लेता, माल मोफत में ऐसे ही देता ।
नाम हरि अनमोल रतन है, कौड़ी लगे न दाम ॥२॥मैं…
बाट तराजू कछु नहीं भाई, मोलतोल उसका कछु नाहीं ।
करल्यो सौदा सत-संगत का, टोटे का नहीं काम ॥३॥मैं…
राम-नामका खुल्या खजाना, कुद पड्या नर चतुर सुजाना ।
सुगरा-सेन तुरत पहिचाने, नुगरे का नहीं काम ॥४॥मैं…
पाँचु की परतीत न कीजे, नाम हरि का निर्भय लीजे ।
मगन होय हरिके गुन गावो, भजल्यो सीताराम ॥५॥मैं…
सस्ता माल नफा है भारी, सहस्त्रगुनी देव साहूकारी ।
करल्यो सुरता राम भजन में, मिल जाय राधेश्याम ॥६॥मैं…
नाम हरि अनमोल रतन है, सब धन से यह ऊँचा धन है ।
कह गिरधारीलाल और धन, मिथ्या जान तमाम ॥ ७ ॥ मैं…

(११)

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ?
क्रोध न छोड़ा, झूँठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ?
झूठे जग में जी ललचा कर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ?
कौड़ी को तो खूब सम्भाला, लाल-रतन क्यों छोड़ दिया ?
जिहि सुमिरन ते अति सुख पावे, सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ?
मानव इक भगवान भरोसे, तन-मन-धन क्यों न छोड़ दिया ?

(१२)

श्रीवृन्दावन-धाम अपार रटे जा राधे-राधे।
भजे जा राधे-राधे ! कहे जा राधे-राधे ॥१॥
वृन्दावन गलियाँ डोले, श्रीराधे-राधे बोले।
वाको जनम सफल हो जाय, रटे जा राधे-राधे ॥२॥
या ब्रज की रज सुन्दर है, देवन को भी दुर्लभ है।
मुक्ता रज शीश चढ़ाय, रटे जा राधे-राधे ॥३॥
ये वृन्दावन की लीला, नहीं जाने गुरु या चेला।
ऋषि-मुनि गये सब हार, रटे जा राधे-राधे ॥४॥
वृन्दावन रास रचायो, शिव गोपी रूप बनायो।
सब देवन करें विचार, रटे जा राधे-राधे ॥५॥
जो राधे-राधे रटतो, दुःख जनम-जनम को कटतो।
तेरो बेड़ो होतो पार, रटे जा राधे-राधे ॥६॥
जो राधे-राधे गावे, सो प्रेम पदारथ पावे।
भव-सागर होवें पार, रटे जा राधे-राधे ॥७॥
जो राधा नाम न गायो, सो विरथा जनम गँवायो।
वाको जीवन है धिक्कार, रटे जा राधे-राधे ॥८॥
जो राधा-जनम न होतो, रसराज विचारो रोतो।
होतो न कृष्ण अवतार, रटे जा राधे-राधे ॥९॥
मंदिर की शोभा न्यारी, यामें राजत राजदुलारी।
ड्यौढ़ी पर ब्रह्मा राजे, रटे जा राधे-राधे ॥१०॥
जेहि वेद पुराण बखाने, निगमागम पार न पाने।
खड़े वे राधे के दरबार, रटे जा राधे-राधे ॥११॥
तू माया देख भुलाया, वृथा ही जनम गँवाया।
फिर भटकैगो संसार, रटे जा राधे-राधे ॥१२॥

(१३)

बोलो राम राम राम राम राम राम, भज मन प्यारे सीताराम।टेक।
संतनके जीवन ध्रुव-तारे, भक्तों के प्राणों से प्यारे।
विश्वंभर सब जग रखवारे, सब विधि पूरण-काम, राम ॥भज१॥
अजामेल दुःख टारनहारे, गज-गणिका को तारनहारे।
द्रुपद-सुता भय वारनहारे, सुखमय मंगल-धाम, राम ॥भज२॥
अनल अनिल जल रवि शशि तारे, पृथ्वी गगन गन्ध रस सारे।
तुझ सरिताके सभी फुवारे, तू सबका विश्राम, राम ॥भज३॥
तुझ पर तन-मन-धन-जन वारे, तुम प्रेमामृत-मद मतवारे।
धन्य-धन्य वे जग उजियारे, जिनके मुख श्रीराम, राम ॥भज४॥

(१४)

बोल हरि बोल हरि, हरि बोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥टेर॥
नाम प्रभु का है सुखकारी, पाप कटेंगे क्षणमें भारी।
नामका पीले अमृत घोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥१॥
शबरी अहिल्या सदन कसाई, नाम जपनसे मुक्ति पाई।
नाम की महिमा है बेतोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥२॥
सुवा पढ़ावत गणिका तारी, बड़े-बड़े निशिचर संहारी।
गिन-गिन पापी तारे तोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥३॥
नरसी भगतकी हुण्डी सिकारी, बन गयो साँवलशाह बनवारी।
कुण्डी अपने मनकी खोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥४॥
जो-जो शरण पड़े प्रभु तारे, भवसागरसे पार उतारे।
बन्दे तेरा क्या लगता है मोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥५॥
राम-नामके सब अधिकारी, बालक वृद्ध युवा नर नारी।
हरि जप इत-उत कबहुँ न डोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥६॥
चक्रधारी भज हर गोविन्दम्, मुक्तिदायक परमानन्दम्।
हरदम कृष्ण मुरारी बोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥७॥

रट ले मन ! तू आठों याम, राम नाममें लगे न दाम ।
जन्म गँवाता क्यों अनमोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥८॥
अर्जुनका रथ आप चलाया, गीता कहकर ज्ञान सुनाया ।
बोल, बोल, हित-चितसे बोल, केशव माधव गोविन्द बोल ॥९॥

(१५)

सीताराम सीताराम सीताराम बोल,
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल ॥
यह दुनिया है गोरख-धन्धा, भेद समझता कोई-कोई बन्दा ।
ब्रह्म स्वरूप तराजू तोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥
क्यों विषयों में मन को लगाया, पालनहार को दिलसे भुलाया ।
जीवन मिट्टीमें ना रोल, राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल ॥
भज ले रे मन ! कृष्ण मुरारी, नटवर-नागर कुञ्ज-बिहारी ।
ना लगता कछु तेरा मोल, राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल ॥
राम भजन बिन मुक्ति न होवे, हीरा-जन्म तू व्यर्थ ही खोवे ।
राम-रसामृत पीले घोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥
लख चौरासीमें भरमाया, मुश्किलसे यह नर-तन पाया ।
मूरख अंधे नैना खोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥
जो चाहे भव-सागर तरना, मिट जावे यह जीना-मरना ।
पापकी गठरी सिरसे खोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥
राधे-कृष्ण श्याम-बिहारी, गोपी-वल्लभ गिरवर-धारी ।
मोहन नटवर-नागर बोल, राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल ॥
नाम प्रभुका है सुखकारी, पाप कटेंगे क्षणमें भारी ।
पापकी गठरी दे तू खोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥
प्राणी है तू भोला-भाला, मायाका है खेल निराला ।
खुल जायेगी तेरी पोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥

हरि बिन बीतत ऊमर सारी, फिर आयेगी कालकी बारी।
प्रभु-पद तूँ भज ले अनमोल, सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥

(१६)

तेरी पार करैगो नैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥
निशि-दिन भज गोपाल पियारे, मोर-मुकुट पीताम्बर-धारे।
भक्तोंके रखवैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ १ ॥
स्वाँस-स्वाँस भज नन्द-दुलारे, वोही बिगड़े काज सँवारे।
नटवर चतुर रिझैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ २ ॥
अर्जुनके हित रथको हाँका, साँवरिया गिरधारी बाँका।
भारत युद्ध जितैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ ३ ॥
ग्वाल-बाल सँग धेनु चरावै, लूट-लूट दधि माखन खावै।
कालीनाग नथैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ ४ ॥
भक्त सुदामा चावल लाये, गले लगाकर भोग लगाये।
कहकर भैया-भैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ ५ ॥
नरसीजीने टेर लगाई, साँवलशाह नहिं देर लगाई।
देके भात भरैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ ६ ॥
संकटसे प्रह्लाद उबार्‌यो, खंभ फाड़ हिरनाकुश मार्‌यो।
नरसिंह-रूप धरैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ ७ ॥
जल-डूबतगजहरिहिंपुकार्‌यो, छाड़िगरुड़प्रभुतुरतसिधार्‌यो।
गजकी टेर सुनैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ ८ ॥
आरत हो गजराज पुकारा, मैं हूँ भगवन् दास तुम्हारा।
पहुँचे गरुड़ चढ़ैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ ९ ॥
अबलाको दे शरण न कोई, भरी सभामें द्रौपदी रोई।
पहुँचे चीर बढ़ैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ १० ॥

वनमें एक शिला थी भारी, चरण छुवाय अहिल्या तारी ।
ऐसे स्वर्ग पठैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ ११ ॥
दीनानाथ सर्व हितकारी, संकट-मोचन कृष्ण मुरारी ।
जनका पत रखवैया, भज मन कृष्ण कन्हैया ॥ १२ ॥

(१७)

रे मन-प्रति-स्वाँस पुकार यही, जय राम हरे ! घनश्याम हरे !
तन-नौकाका पतवार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥ १ ॥
जगमें व्यापक आधार यही, जगमें लेता अवतार यही ।
है निराकार-साकार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥ २ ॥
ध्रुवको ध्रुव-पद दातार यही, प्रह्लाद गलेका हार यही ।
नारद-वीणाका तार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥ ३ ॥
सब सुकृतोंका आगार यही, गंगा-यमुनाकी धार यही ।
श्रीरामेश्वर हरिद्वार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥ ४ ॥
सज्जनका साहूकार यही, प्रेमी-जनका व्यापार यही ।
सुख 'विन्दु' सुधाका सार यही, जय राम हरे घनश्याम हरे ॥ ५ ॥

(१८)

जग असारमें सार रसना ! हरि-हरि बोल ॥
यह तन है एक जर्जरि नैया, केवल है हरिनाम खिवैया ।
हरिसे नाता जोड़, रसना ! हरि-हरि बोल ॥ १ ॥
यह तन तुझको करज मिला है, चुकता तूने कुछ न किया है ।
जगसे नाता तोड़, रसना ! हरि-हरि बोल ॥ २ ॥
ना पूरा तो थोड़ा कर ले, राम-नाम हिरदयमें धर ले ।
हरि सुमिरन कर शोर, रसना ! हरि-हरि बोल ॥ ३ ॥
लख-चौरासी भरम गमायो, बड़े भाग मानुष तन पायो ।
जाग ! हो गया भोर, रसना ! हरि-हरि बोल ॥ ४ ॥

(१९)

गोविन्द जय-जय, गोपाल जय-जय।
राधा-रमण हरि, गोविन्द जय-जय ॥ १ ॥
ब्रह्माकी जय-जय, विष्णूकी जय-जय।
उमा-पति शिव शंकरकी जय-जय ॥ २ ॥
राधाकी जय-जय, रुक्मिणिकी जय-जय।
मोर-मुकुट बंशीवारेकी जय-जय ॥ ३ ॥
गंगाकी जय-जय, यमुनाकी जय-जय।
सरस्वती, तिरवेणीकी जय-जय ॥ ४ ॥
रामकी जय-जय, श्यामकी जय-जय।
दशरथ कुँवर चारों भैयोंकी जय-जय ॥ ५ ॥
कृष्णाकी जय-जय, लक्ष्मीकी जय-जय।
कृष्ण-बलदेव दोनों भइयोंकी जय-जय ॥ ६ ॥

(२०)

तेरी बन जैहै गोविंद गुन गायेसे, रामगुण गायेसे ॥टेर॥
ध्रुवकी बन गई, प्रह्लादकी बन गई।
द्रौपदीकी बन गई चीरके बढ़ायेसे ॥तेरी०॥१॥
बालीकी बन गई, सुग्रीवकी बन गई।
हनुमतकी बन गई, सिया-सुधि लायेसे ॥तेरी०॥२॥
नन्दकी बन गई, यशोदाकी बन गई।
गोपियनकी बन गई, माखनके खवायेसे ॥तेरी०॥३॥
गजकी बन गई, गीधकी बन गई।
केवटकी बन गई नाव पै चढ़ायेसे ॥तेरी०॥४॥
ऊधवकी बन गई, भीष्मकी बन गई।
अर्जुनकी बन गई, गीता-ज्ञान पायेसे ॥तेरी०॥५॥

तुलसीकी बन गई, सूराकी बन गई।
मीराकी बन गई, गोविन्दके रिझायेसे ॥तेरी०॥६॥

(२१)

भजता क्यूँ ना रे हरिनाम, तेरी कौड़ी लगे न छिदाम ॥टेर॥
दाँत दिया है मुखड़ेकी शोभा, जीभ दई रट नाम ॥ १ ॥
नैणा दिया है दरशण करबा, कान दिया सुण ज्ञान ॥ २ ॥
पाँव दिया है तीरथ करबा, हाथ दिया कर दान ॥ ३ ॥
शरीर दियो उपकार करणने, हरि-चरणाँमें ध्यान ॥ ४ ॥
बन्दा! तेरी कौड़ी लगे न छदाम, रटता क्यों नहिं रे हरिनाम? ॥ ५ ॥

(२२)

भजो रे मन, राम-नाम सुखदाई ॥
राम नामके दो अक्षरमें, सब सुख शान्ति समाई ॥ भजो० ॥१॥
रामको नाम लेत मुखसे, भवसागर तर जाई ॥ भजो० ॥२॥
राम-नाम भज ले मन मूरख, बनत-बनत बन जाई ॥ भजो० ॥३॥
राम-नामके कारन बन गई, पागल मीरा बाई ॥ भजो० ॥४॥
गणिका गिद्ध अजामिल तारे, तारे सदन कसाई ॥ भजो० ॥५॥
जूठे बेरनमें शबरीके, भर गई कौन मिठाई ॥ भजो० ॥६॥
मीठे समझके ना प्रभु खाये, प्रेमकी थी अधिकाई ॥ भजो० ॥७॥

(२३)

तू राम भजन कर प्राणी, तेरी दो दिनकी जिन्दगानी ॥
काया-माया बादल छाया, मूरख मन काहे भरमाया।
उड़ जायेगा साँसका पंछी, फिर क्या है आनी-जानी ॥ तू० ॥१॥
जिनके घरमें माँ नहीं है, बाबा करे ना प्यार;
ऐसे दीन अनाथोंका है, राम-नाम आधार।
मुख बोल रामकी बानी, मनवा बोल रामकी बानी ॥ तू० ॥२॥

सजन सनेही सुखके संगी, दुनियाकी है चाल दुरंगी।
नाच रहा है काल शीश पै, चेत-चेत अभिमानी ॥तू० ॥३॥
जिसने राम-नाम गुन गाया, उसको लगे न दुखकी छाया।
निर्धनका धन राम-नाम है, मैं हूँ राम दिवानी ॥तू० ॥४॥

(२४)

सोइ रसना, जो हरि-गुन गावै।
नैननिकी छबि यहै चतुरता, जो मुकुन्द मकरंदहि ध्यावै ॥ १ ॥
निर्मल चित्त तो सोई साँचौ, कृष्ण बिना जिहि और न भावै।
स्रवननकी जू यहै अधिकाई, सुनि हरि कथा सुधारस पावै ॥ २ ॥
कर तेई जे स्यामहिं सेवैं, चरननि चलि वृन्दावन जावैं।
सूरदास जैये बलि वाके, जो हरि जू सौं प्रीति बढ़ावै ॥ ३ ॥

(२५)

चाहता जो परम सुख तूँ, जाप कर हरिनाम का।
परम पावन परम सुन्दर, परम मंगलधाम का ॥
लिया जिसने है कभी, हरिनाम भय-भ्रम-भूलसे।
तर गया वह भी तुरत, बन्धन कटे जड़मूल से ॥
हैं सभी पातक पुराने, घास सूखे के समान।
भस्म करनेको उन्हें, हरिनाम है पावक समान ॥
सूर्य उगते ही अँधेरा, नाश होता है यथा।
सभी अघ हैं नष्ट होते, नाम की स्मृति से तथा ॥
जाप करते जो चतुर नर, सावधानी से सदा।
वे न बँधते भूलकर, यम-पाश दारुण में कदा ॥
बात करते, काम करते, बैठते उठते समय।
राह चलते, नाम लेते, विचरते हैं वे अभय ॥

साथ मिलकर प्रेम से, हरिनाम करते गान जो।
मुक्त होते मोह से, कर प्रेम-अमृत-पान सो॥

(२६)

राम कहो राम कहो राम कहो बावरे।
अवसर ना भूल प्यारे भलो पायो दाँव रे॥ टेर॥
जिन तोकूँ तन दीन्हो, ताको नहीं भजन कीन्हो।
जनम सिरानो जात, लोहेके सो तावरे॥ १॥
रामजीको गाय-गाय, रामजी रिझाय रे।
रामजीके चरण-कमल, चित्त माँहि लाय रे॥ २॥
कहत मलूकदास छोड़ दे तूँ झूठी आस।
आनन्द मगन होय, हरिगुण गाय रे॥ ३॥

(२७)

जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।
काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे॥ १॥
कौन देव बरिआय बिरद-हित, हठि-हठि अधम उधारे।
खग, मृग, व्याध, पषान, बिटप जड़ जवन कवन सुर तारे॥ २॥
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब, माया बिबस बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे॥ ३॥

(२८)

प्यारे! जरा तो मनमें बिचारो, क्या साथ लाये अरु ले चलोगे।
जावे यही साथ सदा पुकारो, गोविन्द! दामोदर! माधवेति॥ १॥
नारी धरा-धाम सुपुत्र प्यारे, सन्मित्र सद्बान्धव द्रव्य सारे।
कोई न साथी, हरिको पुकारो, गोविन्द! दामोदर! माधवेति॥ २॥
नाता भला क्या जगसे हमारा, आये यहाँ क्यों? कर क्या रहे हैं।
सोचो विचारो, हरिको पुकारो, गोविन्द! दामोदर! माधवेति॥ ३॥

सच्चे सखा हैं हरि ही हमारे, माता पिता स्वामि सुबन्धु प्यारे ।
भूलो न भाई दिन-रात गावो, गोविन्द ! दामोदर ! माधवेति ॥४॥

(२९)

रघुपति राघव राजाराम, पतित-पावन सीताराम ।
सीताराम सीताराम, भज मन प्यारे सीताराम ॥ १ ॥
भीड़ पड़ी भक्तोंने पुकारा, कष्ट हरा प्रभु आप हमारा ।
तब दशरथ घर प्रगटे राम, पतित-पावन सीताराम ॥ २ ॥
ताड़क वनमें ताड़का मारी, गौतम नारि अहिल्या तारी ।
सब ऋषियोंके पूरणकाम, पतित-पावन सीताराम ॥ ३ ॥
जनकपुरीमें शिव-धनु तोरी, सीताराम विवाह भयो री ।
कैसी सुन्दर जोरी राम, पतित-पावन सीताराम ॥ ४ ॥
राजतिलककी देख तैयारी, कैकयीने तब बात बिगाड़ी ।
चौदह वर्ष गये वन राम, पतित-पावन सीताराम ॥ ५ ॥

(३०)

रघुपति राघव राजा राम, पतित-पावन सीताराम ॥ १ ॥
सीताराम सीताराम, भज प्यारे तू सीताराम ॥ २ ॥
राम-कृष्ण है तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान ॥ ३ ॥
दीन-दयालु राजाराम, पतित-पावन सीताराम ॥ ४ ॥
जय रघुनन्दन जय सियाराम, जानकि-वल्लभ सीताराम ॥ ५ ॥
जय यदुनन्दन जय घनश्याम, रुक्मिणि-वल्लभ राधेश्याम ॥ ६ ॥
जय मधुसूदन जय गोपाल, जय मुरलीधर जय नन्दलाल ॥ ७ ॥
जय दामोदर कृष्ण मुरारे, देवकिनन्दन सर्वाधार ॥ ८ ॥
जय गोविन्द जय गोपाल, केशव माधव दीनदयाल ॥ ९ ॥
राधाकृष्ण जय कुञ्जबिहारी, मुरलीधर गोवर्धन धारी ॥ १० ॥
दशरथनन्दन अवधकिशोर, यशुमति सुत जय माखन चोर ॥ ११ ॥

कौशल्याके प्यारे राम, यशुमति सुत जय नवघनश्याम ॥ १२ ॥
वृन्दावन मथुरामें श्याम, अवधपुरीमें सीताराम ॥ १३ ॥
जय गिरिजापति जय महादेव, जय जय शम्भो जय महादेव ॥ १४ ॥
जय जय दुर्गा जय माँ तारा, जय गणेश जय शुभ आगारा ॥ १५ ॥

(३१)

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥ १ ॥
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे,
हे नाथ ! नारायण वासुदेव ॥ २ ॥
गोविन्द गरुड़ध्वज प्राणप्यारे,
हे नाथ नारायण वासुदेव ॥ ३ ॥
श्रीकृष्ण-चैतन्य प्रभु नित्यानन्द,
हरे कृष्ण हरे राम राधे-गोविन्द ॥ ४ ॥
श्रीमन्नारायण नारायण नारायण,
भज मन नारायण नारायण नारायण ॥ ५ ॥
गोविन्द जय-जय गोपाल जय-जय,
राधामोहन हरि गोविन्द जय-जय ॥ ६ ॥
गोविन्द हरे गोपाल हरे,
जय केशव माधव श्याम हरे ॥ ७ ॥
मुरलीधर माधव श्याम हरे,
जय-जय प्रभु दीनदयाल हरे ॥ ८ ॥
जय कृष्ण हरे गोविन्द हरे,
जय-जय गिरिधर गोपाल हरे ॥ ९ ॥
जय राम हरे जय कृष्ण हरे,
जय मुरलीधर घनश्याम हरे ॥ १० ॥

मन-मोहन सुन्दर श्याम हरे,
घनश्याम हरे राधेश्याम हरे ॥ ११ ॥
हरि बोल हरि बोल, बोल हरि बोल,
मुकुन्द माधव गोविन्द बोल ॥ १२ ॥
बोल हरि बोल हरि हरि हरि बोल,
केशव माधव गोविन्द बोल ॥ १३ ॥
जय राधे जय राधे-राधे !
जय राधे जय श्रीराधे ॥ १४ ॥
जय कृष्ण जय कृष्ण-कृष्ण !
जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण ॥ १५ ॥
परम—मधुर युगल—नाम,
राधेकृष्ण सीताराम ॥ १६ ॥
जय कृष्ण हरे गोविन्द हरे,
जय जय गोपाल मुकुन्द हरे ॥ १७ ॥
जय-जय मोहन माखनचोर,
मुकुन्द माधव नन्दकिशोर ॥ १८ ॥
जय केशव करुणाकन्दा,
जय नारायण गोविन्दा ॥ १९ ॥
राम कृष्ण गोविन्द दामोदर हरि !
दीनबन्धु दयाके सागर श्रीहरि ॥ २० ॥
राधा-कृष्ण मनोहर जोरी,
नन्द-नन्दन वृषभानुकिशोरी ॥ २१ ॥
हरे कृष्ण, हरे राम, नारायण
राधेश्याम, नारायण सीताराम ॥ २२ ॥

ॐ आनन्दं ॐ आनन्दं
ॐ आनन्दं ॐ ॐ ओम् ॥ २३ ॥
श्रीराधे-राधे गोविन्द-गोविन्द बोलो रे,
गोविन्द बोलो भैया, गोविन्द बोलो रे ॥ २४ ॥
जय-जय सीतापति-रामा,
जय-जय राधे-घनश्यामा ॥ २५ ॥
भजो राधे-गोविन्द, भजो राधे-गोविन्द ।
भजो राधे-गोविन्द, भजो राधे-श्याम ॥ २६ ॥

(३२)

नन्दनन्दन घनश्याम, भज मन राधे राधे,
जीवन-धन घनश्याम ॥ भज० ॥ १ ॥
गोपीजन — प्राणधन,
वृन्दावन — विहारी श्याम ।
भक्तनके जीवन — धन,
अवध — विहारी राम ॥ २ ॥
गोपी — वल्लभ राधेश्याम,
प्रेमसे बोलो सीताराम ॥ ३ ॥
दीनबन्धु दीनानाथ,
मेरी डोरी तेरे हाथ ।
शरण पड़ेगी रख लो लाज,
दीनबन्धु दीनानाथ ॥ ४ ॥
दीनानाथ आवो नाथ,
करुणा — हस्त बढ़ाओ नाथ ॥ ५ ॥
राम-धुन लागी, गोपाल-धुन लागी,
कृष्ण-धुन लागी, गोविन्द-धुन लागी ॥ ६ ॥

राधे—कृष्ण गोविन्द-गोविन्द,
जय गोपाल ॥ ७ ॥
कृष्ण हो रामा-रामा,
गोविन्द हरि—हरि ॥ ८ ॥
जय सीताराम सीताराम,
सीताराम जय सीताराम ॥ ९ ॥
जय सिया — राम,
जय-जय सियाराम ॥ १० ॥
गोविन्दो नहिं गायो तो,
फिर क्या कमायो बावरे ॥ ११ ॥
भज बालकृष्ण नन्दलाल, गोविन्द गोपाला,
तेरी माधुरी-मूरत पै वारूँ गोपाल ॥ १२ ॥
कुञ्जमें विराजे घनश्याम,
भज मन राधे—राधे ॥ १३ ॥
राजा रणछोड़, राजा रणछोड़,
द्वारकाको नाथ म्हारो राजा रणछोड़ ॥ १४ ॥
नटवर — नागर — नन्दा,
भजो रे मन गोविन्दा ॥ १५ ॥
मुख राम कृष्ण, राम कृष्ण बोलिये रे,
सीताराम न भजिने लावो लीजिये रे ॥ १६ ॥
सत् चित् आनन्द राजाराम !
पतित — पावन श्रीपति राम ॥ १७ ॥
राम जपु राम जपु राम जपु बावरे,
घोर भव-नीर-निधि नाम निज नाव रे ॥ १८ ॥
हरिः शरणं हरिः शरणं,
हरिः शरणं हरिः शरणं (सनकादि) ॥ १९ ॥

संसारना भय निकट न आवे,

श्रीकृष्ण गोविन्द गोपाल गाताँ (नरसी)॥२०॥

जय — जय महादेव शंभो!

काशी विश्वनाथ गंगा ॥ २१ ॥

रामजीका नाम सदा मिसरी,

जब चाखै तब गोद गिरी ॥ २२ ॥

राम नाम लड्डुवा, गोपाल नाम घी,

कृष्ण-नाम खीर-खाँड, घोल घोल पी ॥ २३ ॥

तालियाँ बजावो भाई!

राधे — गोविन्द गावो!

सीताराम राधेश्याम बोलो,

और बुलावो ॥ २४ ॥

(३३)

सुरता राम भजाँ सुख पावो ॥

राम भज्याँ थारा बन्धन कटजा। सहज परमपद पावो ॥टेर॥

सत-संगत कर हरि रस पीवो। संशय ताप मिटाओ।

हरिका ध्यान धरो निसिवासर। नामकी रटन लगाओ ॥

सुकृत-कर्म करो विनु स्वारथ। संयम सेवा बढ़ावो।

रामकृपाते सतगुरु मिलिया। उनके चरण चित लाओ।

(३४)

जय जय राम जय सूर सूदन। जय माधव जय विष्णो।

जय लक्ष्मी मुख कमल मधुव्रत। जय दशकन्धर जिष्णो ॥ १ ॥

हर मम नरक रिपो नारायण। केशव कल्मष भारम्।

मामनुकंपय दीनमनाथं। कुरु भवसागर पारम् ॥ २ ॥

त्वं जननी जनक प्रभुरच्युत। त्वं च सुहृत् कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणागतवत्सल। त्वं भव जलधि वहित्रम्॥ ३॥
अपराधं मे मुरहर परिहर। कुर्वे चरणाश्रयणम्।
संसारार्णवतरणे करुणावरुणालय भवशरणम्॥ ४॥
करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि॥ ५॥
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति॥ ६॥
सुखावसाने इदमेव सारं दुःखावसाने इदमेव ज्ञेयम्।
देहावसाने इदमेव जाप्यं गोविन्द दामोदर माधवेति॥ ७॥

अभिलाषा

(१)

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे,
लताओं में ब्रज की गुजारा करेंगे, कन्हैया···॥टेर॥
कहीं तो मिलेंगे वो बाँके बिहारी,
उन्हीं के चरण चित लगाया करेंगे, कन्हैया···॥ १ ॥
बना करके हृदय में हम प्रेम मन्दिर,
वहीं उनको झूला झुलाया करेंगे, कन्हैया···॥ २ ॥
उन्हें हम बिठावेंगे आँखों में, दिल में,
उन्हीं से सदा लौ लगाया करेंगे, कन्हैया···॥ ३ ॥
जो रूठेंगे हमसे वो बाँके बिहारी,
चरण पड़ उन्हें हम मनाया करेंगे, कन्हैया···॥ ४ ॥
उन्हें प्रेम डोरी से हम बाँध लेंगे,
तो फिर वो कहाँ भाग जाया करेंगे, कन्हैया···॥ ५ ॥
उन्होंने छुड़ाये थे गज के वो बन्धन,
वही मेरे संकट मिटाया करेंगे, कन्हैया···॥ ६ ॥
उन्होंने नचाये थे ब्रह्माण्ड सारे,
मगर अब उन्हें हम नचाया करेंगे, कन्हैया···॥ ७ ॥
भजेंगे जहाँ प्रेम से नन्द-नन्दन,
कन्हैया छवि को दिखाया करेंगे, कन्हैया···॥ ८ ॥

(२)

चालो चालो सखी दर्शन कर ल्यो
रथ चढ़ रघुनन्दन आवत है ॥ टेर ॥

आर वार मोतियन की झलक है,
विच बिच राम विराजत है ॥ १ ॥
सियारामा, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न,
हनुमत चँवर दुलावत है ॥ २ ॥
मृदंग, झाँझ, पखावज वाजे,
नारद बेन बजावत है ॥ ३ ॥
सुर नर मुनि सब दर्शन आये,
सखियाँ मंगल गावत है ॥ ४ ॥
तुलसीदास आस रघुवर की,
चरणाँ चित्त लगावत है ॥ ५ ॥

(३)

मोहन हमारे मधुवन में तुम आया न करो,
जादू भरी या बाँसुरी बजाया न करो ॥टेर॥
सूरत तुम्हारी देख के सलोनी साँवरी,
सुन बाँसुरी की राग को हम हो गई बावरी,
माखन को चुराने वाले दिल चुराया न करो ॥ १ ॥
माथे मुकुट, गलमाल, कटि में काछनी सोहे,
कानों में कुण्डल झूमके मन मेरे को मोहे,
इस चन्द्रमा के रूप को लुभाया न करो ॥ २ ॥
अपनी यशोदा मात की सौगन्ध है तुमको,
यमुना नदी के तीर पै तुम ना मिलो हमको,
इस बाँसुरी की तान पै विलमाया न करो ॥ ३ ॥
इसी तुम्हारी बाँसुरी ने मोहिनी डारी,
चन्द्र सखी की बीनती तुम सुनियो बनवारी,
दरस दिखा दे साँवरा अब देर ना करो ॥ ४ ॥

(४)

मुझे है काम ईश्वर से जगत रूठे तो रूठन दे ॥टेर॥
कुटुम्ब परिवार सुत-दारा, माल धन लाज लोकन की।
प्रभु का भजन करने में, अगर छूटे तो छूटन दे ॥ १ ॥
बैठ संगत में संतन की, करूँ कल्याण मैं अपना।
लोक दुनिया के भोगों में, मौज लूटे तो लूटन दे ॥ २ ॥
प्रभु के ध्यान करनेसे लगी-दिल में लगन मेरे।
प्रीत संसार विषयों से अगर टूटे तो टूटन दे ॥ ३ ॥
धरी सिर पाप की मटकी, मेरे गुरुदेव ने पटकी।
वो ब्रह्मानन्द ने पटकी, अगर फूटे तो फूटन दे ॥ ४ ॥

(५)

आज मोहिं लागे वृन्दावन नीको ॥
घर-घर तुलसी ठाकुर सेवा, दरसण गोविन्दजीको ॥ १ ॥
निरमल नीर बहत जमुनामें, भोजन दूध दहीको।
रतन सिंघासण आपु विराजै, मुकुट धर्‌यो तुलसीको ॥ २ ॥
कुञ्जन-कुञ्जन फिरत राधिका, सबद सुणत मुरलीको।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीको ॥ ३ ॥

(६)

इतना तो करना स्वामी ! जब प्राण तनसे निकले।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तनसे निकले ॥ १ ॥
श्रीगंगाजीका तट हो, यमुनाका बंशी-वट हो।
मेरे साँवरा निकट हो, जब प्राण तनसे निकले ॥ २ ॥
श्रीवृन्दावनका स्थल हो, मेरे मुखमें तुलसी-दल हो।
विष्णु-चरणका जल हो, जब प्राण तनसे निकले ॥ ३ ॥

सन्मुख साँवरा खड़ा हो, मुरलीका स्वर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तनसे निकले॥ ४॥
सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तनसे निकले॥ ५॥
केसर तिलक हो आला, मुख चन्द्र-सा उजाला।
डालूँ गले में माला, जब प्राण तनसे निकले॥ ६॥
कानों जड़ाऊँ वाली, लटकी लटें हों काली।
देखूँ छटा निराली, जब प्राण तनसे निकले॥ ७॥
पीताम्बरी कसी हो, होठों पै कुछ हँसी हो।
छवि यह ही मन बसी हो, जब प्राण तनसे निकले॥ ८॥
पचरंगी काछनी हो, पट-पीतसे तनी हो।
मेरी बात सब बनी हो, जब प्राण तनसे निकले॥ ९॥
पग धो तृषा मिटाऊँ, तुलसी का पत्र पाऊँ।
सिर चरण-रज लगाऊँ, जब प्राण तनसे निकले॥ १०॥
आना अवश्य आना, राधे को साथ लाना।
दर्शन मुझे दिखाना, जब प्राण तनसे निकले॥ ११॥
जब कण्ठ प्राण आवे, कोई रोग ना सतावे।
यम दरश न दिखावे, जब प्राण तनसे निकले॥ १२॥
मेरा प्राण निकले सुखसे, तेरा नाम निकले मुखसे।
बच जाऊँ घोर दुःखसे, जब प्राण तनसे निकले॥ १३॥
उस वक्त जल्दी आना, नहीं श्याम! भूल जाना।
मुरलीकी धुन सुनाना, जब प्राण तनसे निकले॥ १४॥
सुधि होवे नाहिं तनकी, तैयारी हो गमनकी।
लकड़ी हो व्रज-वनकी, जब प्राण तनसे निकले॥ १५॥
यह नेक-सी अरज है, मानो तो क्या हरज है?।
कुछ आपका फरज है, जब प्राण तनसे निकले॥ १६॥

(७)

थे तो आरोगोनी मदनगोपाल !, कटोरो ल्याई दूधरो भर्‌यो ॥टेर॥
दूधाजी म्हाने दई भेलावण, जद मैं आई चाल ;
धोली-धेनुको दूध गरम कर, ल्याई मिसरी घाल ।
क्याने रूठ गया मेड़तिया-भगवान् ? कटोरो० ॥ १ ॥
किस विध रूठ गया छोगाला[1], कारण कहो महाराज ! ;
दूध-कटोरो धर्‌यो सामने, पीवणरी काँई लाज ।
भूखा मरतारा चिप जासी थारा गाल; कटोरो० ॥ २ ॥
श्याम-सलोना दूध आरोगो, साँची बात सुनाऊँ ;
विना पियाँ यो दूध-कटोरो, पाछी-परते[2] न जाऊँ ।
देस्यूँ साँवरिया चरणामें देही त्याग; कटोरो० ॥ ३ ॥
डरिया श्याम करुणा सुण प्रभु जी, लियो कटोरो हाथ ;
गट-गट दूध पिवणने लाग्या, चार भुजाँरा नाथ ।
वालो राखे हैं भगताँरी जाती लाज; कटोरो० ॥ ४ ॥
हरष चली मीरा महलाँमें, खाली कटोरो लेय ;
दूध प्याय; दादा—दूधाजीने दियो कटोरो देय ।
खाली देखत कटोरो राव रिसाय; कटोरो० ॥ ५ ॥
अब मीराँ पर आफत आई, साँची झूठी केवे ;
साँपरतँ[3] दूध पियो छोगालो कौन गवाही देवे ?
थाँने निजर याँसूँ दिखाऊँ वालो साथ; कटोरो० ॥ ६ ॥
सज्यो कटोरो दूध सकल मिल, ले मीराँने सागे ;
साराँ देखत दूध-कटोरो धर्‌यो प्रभुजी आगे ।
मीराँ ऊभी-ऊभी करै अरदास; कटोरो० ॥ ७ ॥

---

१. फूलदार मुकुटवाले छैला नटनागर । २. वापस नहीं जाऊँ । ३. प्रत्यक्ष ।

दया करो दीनोंके स्वामी ! अब पत राखो मेरी ;
काल कटोरो झटके पीं गया, क्यूँ कर रह्या देरी ?
काँई शरमाया मीराँरा सरजनहार !; कटोरो० ॥ ८ ॥
सुणी प्रेमकी टेर प्रभूजी, मँद-मन्द मुसकाय ;
मीराँ दासी जाण प्रभूजी च्यारूँ हाथ बढ़ाय।
पी गया मीराँसे कटोरो हाथ उठाय: कटोरो० ॥ ९ ॥
मीराँ नृत्य करे प्रभु आगे, हरष्यो सारो साथ ;
भक्तोंके वसमें गिरधारी, च्यार भुजाँरा नाथ।
प्यारा लागोजी मीराँरा भगवान !; कटोरो० ॥ १० ॥

(८)

थे तो आरोगोजी दीनदयाल ! करमाबाईरो खीचड़लो ॥ टेर ॥
प्रभुजी ! थारो प्रेम पुजारी, गयो तीरथाँ न्हाण ;
जातो-जातो दे गयौ म्हानें, पूजारी भोंलाण।
जद मैं आई थाँरा मन्दरियामें चाल; करमाबाईरो० ॥ १ ॥
मैं छूँ दीन-अनाथनीजी, नहिं जाणूँ पूजा फंद ;
नयों-नवादों धारियो, यों धंधो गोकुलचंद।
तू ही राखणियों भगतांरी वाजी भाल; करमाबाईरो० ॥ २ ॥
नहिं करजाणूं षटरस भोंजन, खाटा सों अनुराग ;
लूखो-सूखो राम खीचड़ों, ग्वाँरफल्याँरो साग।
ल्याई बाटकी में मोठो दही घाल; करमाबाईरो० ॥ ३ ॥
रूस्या क्युँ बैठ्या हो राधा रुकमणजीरा स्याम,
भूखा-मरताँ पटेल सोदो, मास-दिवसरो काम।
थारा भूखाँरा चिपजासी वाला ! गाल; करमाबाईरो० ॥ ४ ॥
समझ गई शरमाया ठाकुर, जाड़ो मोही नवाद ;
धावलियारो पड़दो कीन्हों, प्रगट लियो परसाद।
हरष्यो हिवड़ा में मन लहरी मोतीलाल, करमाबाईरो० ॥ ५ ॥

(९)

बसो मेरे नैननि में यह जोरी।
सुन्दर स्याम कमल-दल-लोचन, संग वृषभानु-किसोरी ॥ १ ॥
मोर-मुकुट मकराकृत कुण्डल, पीताम्बर झक-झोरी।
'सूरदास' प्रभु तुम्हरे दरसकों, का बरनौं मति थोरी ॥ २ ॥

(१०)

बसो मेरे नैननमें नन्दलाल ॥
मोहनी मूरति साँवरि सूरति, नैणा बने बिसाल।
अधर-सुधारस मुरली राजत, उर बैजन्ती माल ॥ १ ॥
छुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
'मीरा' प्रभु संतन सुखदाई, भगत-वछल गोपाल ॥ २ ॥

(११)

आओ नन्द-नन्दना, आओ मन-मोहना।
गोपीजन प्राण-धन, राधा उर-चन्दना ॥ १ ॥
कैसे तुम द्वारिका मैं, द्रोपदीकी टेर सुनी।
कैसे तुम गजराज-काज, नंगे पाँव धाये हो ॥ २ ॥
कैसे तुम गणिकाके, औगुन निवारे नाथ।
कैसे तुम भीलनीके, मीठे बेर खाये हो ॥ ३ ॥
कैसे तुम भारतमें, भीषमको प्रण राख्यो।
कैसे तुम वसुदेवजीके, बन्धन छुटाये हो ॥ ४ ॥
करुणा-निधान श्याम, मेरी बेर मुँदे कान।
अशरण-शरण श्याम, सूर मन भाये हो ॥ ५ ॥

(१२)

राणोजी रूठे तो म्हारो काँई करसी,
म्हे तो गोविन्दरा गुण गास्याँ हे माय।

राणोजी रूठे तो अपनो देश रखासी,
म्हे तो हरि रुठ्याँ कठे जास्याँ हे माय।
लोक-लाजकी काण न राखाँ,
म्हे तो निर्भय निशान घुरास्याँ हे माय।
राम-नामकी जहाज चलास्याँ,
म्हे तो भवसागर तिर जास्याँ हे माय।
हरि-मन्दिरमें निरत करास्याँ,
म्हे तो घूघरिया छमकास्याँ हे माय।
चरणाँमृतको नेम हमारो,
म्हे तो नित उठ दर्शण जास्याँ हे माय।
मीरा गिरधर शरण साँवलके,
म्हे तो चरण-कमल लिपटास्याँ हे माय।

(१३)

और आसरो छोड़, आसरो ले लियो कुँअर-कन्हाईको।
हे वनवारी ! आज माहेरो भरजा नानीबाईको ॥ टेर ॥
असुर-संहारन भक्त-उधारन चार वेद महिमा गाई।
जहँ-जहँ भीर पड़ी भक्तन पै तहँ-तहँ आप करी सहाई।
पृथ्वी लाकर सृष्टि रचाई वराह होय सतयुग माँही।
असुर मार प्रह्लाद उबार्यो प्रगट भये खम्भे माँही।
वावन होय बलीको छल लियो कीन्हों काम ठगाईको ॥ १ ॥
मच्छ-कच्छ अवतार धारकर सुर-नरकी मनसा पूरी।
अर्ध रैन गजराज पुकार्यो गरुण छोड़ पहुँचे दूरी।
भस्मासुरको भस्म करायो सुन्दर रूप बने हरी।
नारदकी नारी ठग लीन्हीं जाकर आप चढ़े चूँरी।
असुरनसे अमृत लै लीन्हों बनकर भेष लुगाईको ॥ २ ॥

परशुराम श्रीरामचन्द्र भये गौतमकी नारी तारी।
भिलनीके फल मीठे खाये शंका त्याग दई सारी।
करमाके घर खीचड़ खायो तारि अधम गणिका नारी।
छलकर तर गई नारि पूतना कुवजा भई आज्ञाकारी।
सेन भगतका साँसा मेट्या रूप बनाकर नाईको ॥ ३ ॥
नामदेव रैदास कबीरो धन्ना भगतको खेत भर्‌यो।
दुर्योधनका मेवा त्यागा साग विदुर-घर पान कर्‌यो।
प्रीत लगाकर गोपी तर गई मीराजीको काज सर्‌यो।
चीर बढ़ायो द्रुपद-सुताको दुःशासनको मान हर्‌यो।
कहे नरसीलो सुन साँवरिया करले काम भलाईको ॥ ४ ॥

(१४)

नरसीलो टेर लगावे जी, थे आवो श्रीभगवान ॥
मैं तेरे भरोसे आयो, पण सागे कछु न ल्यायो।
मैं आकरके पछतायो जी, थे आवो श्रीभगवान ॥ १ ॥
या समय भातकी आई, पण तूँ नहीं सूरत दिखाई।
यों होसी लोग हँसाई जी, थे आवो श्रीभगवान ॥ २ ॥
के निंद्रा थाने आई, के सत्यभामा विलमाई ?
के भक्त कोई अटकायो जी, थे आवो श्रीभगवान ॥ ३ ॥
यो भात भर्‌यो नहीं जासी तो नानी बाई मर जासी।
तो विरद तिहारो जासी जी, थे आवो श्रीभगवान ॥ ४ ॥
जब देवकी-नन्दन आया, कंचनका मेह बरसाया।
यह वेद विमल जस गाया जी, थे आवो श्रीभगवान ॥ ५ ॥

निवेदन

(१)

म्हानै नौकर राखो जी, म्हाने चाकर राखो जी

सॉंवरा गिरधारी म्हानै नौकर राखो जी ॥ टेर ॥

नौकर रहस्याँ बाग लगास्याँ, नित उठ दर्शन पास्याँ

वृन्दावनकी कुञ्जगलिनमें, गोविन्दका गुण गास्याँ ॥ १ ॥

नौकरी में दर्शन पावाँ, सुमरिन पावाँ खरची

भाव भक्ति जागीरी पावाँ, तीनु बाताँ सरसी ॥ २ ॥

मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल वैजन्ती माला

वृन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला ॥ ३ ॥

ऊँचा ऊँचा महल चिनावाँ, बिच बिच राखाँ बारी

साँवरिया का दर्शन पावाँ, पैर कसुमल साड़ी ॥ ४ ॥

जोग करण न जोगी आया तप करने संन्यासी

हरि भजन न साधु आया, वृन्दावन का वासी ॥ ५ ॥

मीरा के प्रभु घेर घुमेरा, हृदय राखो धीरा

अर्द्ध रात प्रभु दर्शन दीज्यो, प्रेम नदी के तीरा ॥ ६ ॥

(२)

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिए।

हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिए ॥ टेर ॥

खा रहा गोते हूँ मैं भवसिन्धु की मझधार में।

आसरा है दूसरा कोई न इस संसार में ॥ १ ॥

मुझमें है जप तप न साधन और नहीं कुछ ज्ञान है।

निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है ॥ २ ॥

पाप बोझे से लदी नैया भँवर में आ रही।
नाथ दौड़ो अब बचाओ, जल्द डूबी जा रही ॥ ३ ॥
आप भी यदि छोड़ देंगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं।
जन्म दुख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं ॥ ४ ॥
सब जगह मंजुल भटक कर अब शरण ली आपकी।
पार करना या न करना दोनों मरजी आपकी ॥ ५ ॥

(३)

दीन दयाल शरण मैं तेरी तुम बिन नाथ कौन गति मेरी ॥टेर॥
जनम मरण में भटकत भूल्यो, कबहूँ न सुरति करी प्रभु तेरी।
अबकी बेर मेरा संकट काटो, मेटो जनम-मरण की फेरी ॥ १ ॥
हूँ गुणहीन कछु नहीं लायक, फिर भी मन अभिमान भर्योरी।
अपनो जानि दया करो दाता, होऊ मैं चरण-शरण प्रभु तेरी ॥ २ ॥
चाह नहीं है भोग्य भोग की, चाह नहीं प्रभु स्वर्ग लोक की।
चाह भरी है तुम दर्शन की, भर दो नाथ दयासे झोरी ॥ ३ ॥
आश तुम्हारे चरण कमल की, लेकर आयो मैं द्वार तुम्हारे।
टुक-टुक निरखूँगा द्वार तुम्हारा, चाहे करो प्रभु कितनी देरी ॥ ४ ॥
लिया सहारा एक तुम्हारा, तुम हो दीनन के हितकारी।
कर किरपा उस राह पे डारो, निशदिन तेरी लगाऊँ मैं फेरी ॥ ५ ॥

(४)

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिन के तुम ही रखवारे हो ॥
प्रतिपाल करो सगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो ॥१॥
भुलि है हम ही तुम को तुम तो, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे मन-मंदिर के उजियारे हो ॥२॥

उपकारन को कछु अंत नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।
महाराज महा महिमा तुमरी, समझे विरले बुधिवारे हो ॥ ३ ॥
इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम से प्रभु पाय प्रताप हरि, केहि के अब और सहारे हो ॥ ४ ॥

(५)

दिला दो भीख दर्शन की प्रभु तेरा भिखारी हूँ ॥ टेर ॥
चलकर दूर देशों से, तेरे दरबार में आया।
खड़ा हूँ द्वार पे दिल में, तेरी आशा का धारी हूँ ॥ १ ॥
फिरा संसार चक्कर में भटकता रात दिन विरथा।
बिना दीदार के तेरे, हमेशा मैं दुखारी हूँ ॥ २ ॥
तुही माता पिता बन्धु, तुही मेरा सहायक है।
तेरे दासन के दासों का चरण का सेवकारी हूँ ॥ ३ ॥
भरा हूँ पाप दोषन से, क्षमा कर भूल को मेरी।
वो ब्रह्मानंद सुन विनती, शरण में मैं तिहारी हूँ ॥ ४ ॥

(६)

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में ॥
यह विनती है पलछिन छिनकी, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥ टेर ॥
चाहे वैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥ १ ॥
चाहे अगनीमें मुझे जलना हो, चाहे काँटों पे मुझे चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥ २ ॥
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर मन नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥ ३ ॥
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे।
तेरी याद तो आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥ ४ ॥

(७)

नाथ मैं थारोजी थारो !

चोखो, बुरो, कुटिल अरु कामी जो कुछ हूँ सो थारो ॥ १ ॥
बिगड़यो हूँ तो थारो बिगड़यो, थे ही मनै सुधारो।
सुधरयो तो प्रभु सुधरयो थारो, थाँ सूँ कदे न न्यारो ॥ २ ॥
बुरो, बुरो, मैं भोत बुरो हूँ, आखर टाबर थारो।
बुरो, कुहाकर मैं रह जास्यूँ, नाँव बिगड़सी थारो ॥ ३ ॥
थारो हूँ, थारो ही बाजूँ, रहस्यूँ थारो थारो !!।
आँगलियाँ नुहँ परै न होवै, या तो आप विचारो ॥ ४ ॥
मेरी बात जाय तो जाओ, सोच नहीं कछु म्हारो।
मेरे बड़ो सोच यो लाग्यो, बिरद लाजसी थारो ॥ ५ ॥
जचै जिसतराँ करो नाथ ! अब, मारो, चाहे त्यारो।
जाँघ उघाड़याँ लाज मरोगा, ऊँडी बात बिचारो ॥ ६ ॥

(८)

भगवान् तुम्हारे चरणों में, मैं तुम्हें रिझाने आई हूँ।
वाणी में तनिक मिठास नहीं, पर विनय सुनाने आई हूँ ॥ १ ॥
प्रभुका चरणामृत लेने को, है पास मेरे कोई पात्र नहीं।
आँखों के दोनों प्यालों में, कुछ भीख माँगने आई हूँ ॥ २ ॥
तुमसे लेकर क्या भेंट धरूँ, भगवान् ! आपके चरणों में।
मैं भिक्षुक हूँ तुम दाता हो, सम्बन्ध बताने आई हूँ ॥ ३ ॥
सेवा को कोई वस्तु नहीं, फिर भी मेरा साहस देखो।
रो-रोकर आज आँसुओं का, मैं हार चढ़ाने आई हूँ ॥ ४ ॥

(९)

सुनो श्यामसुन्दर विनती हमारी।
दरसन को आया दरस भिखारी ॥ टेर ॥

तेज भँवर में फँस गई नैया, तू ही बता अब कौन खिवैया।
कृष्ण कन्हैया गिरवर धारी, हे नटनागर कुँजविहारी॥
हे नाथ आकर अब तो सँभालो, डूबती नैया मोरी पार लगालो।
तेरी शरण में मैं आया नटवर, तुझे लाज रखनी होगी हमारी॥
तुझ बिना कोई न मेरा जहाँ में, जाऊँ कहाँ अब तू ही बता दे।
मेरी लाज जावे तो जावे भले ही, मगर नाथ होगी हाँसी तुम्हारी॥

(१०)

हे दयामय ! दीनबन्धो ! ! दीन को अपनाइये।
डूबता बेड़ा मेरा मझधार पार लँघाइये॥ १॥
नाथ ! तुम तो पतितपावन, मैं पतित सबसे बड़ा।
कीजिये पावन मुझे, मैं शरणमें हूँ आ पड़ा॥ २॥
तुम गरीबनिवाज हो यों जगत सारा कह रहा।
मैं गरीब अनाथ दुःख-प्रवाहमें नित बह रहा॥ ३॥
इस गरीबीसे छुड़ाकर, कीजिये मुझको सनाथ।
तुम सरीखे नाथ पा फिर, क्यों कहाऊँ मैं अनाथ॥ ४॥
हो तृषित आकुल अमित प्रभु ! चाहता जो बूँद नीर।
तुम तृषाहारी अनोखे उसे देते सुधा-क्षीर॥ ५॥
यह तुम्हारी अमित महिमा सत्य सारी है प्रभो !।
किसलिए मैं रहा वंचित फिर अभी तक हे विभो !॥ ६॥
अब नहीं ऐसा उचित प्रभु ! कृपा मुझ पर कीजिये।
पापका बन्धन छुड़ा नित-शान्ति मुझको दीजिये॥ ७॥

(११)

तू दयालु, दीन हौं, तू दानी, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुंजहारी॥ १॥

नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मोसो ?।
मो समान आरत नहिं, आरतिहर तोसो ॥ २ ॥
ब्रह्म तू, हौं जीव हौं, तू ठाकुर, हौं चेरो।
तात, मात, गुरु, सखा, तू सब विधि हितु मेरो ॥ ३ ॥
तोहि मोहि नाते अनेक, मानिये जो भावै।
ज्यों-त्यों 'तुलसी' कृपाल ! चरन-सरन पावै ॥ ४ ॥

(१२)

प्रभु मेरे अवगुण चित न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो ॥ १ ॥
इक लोहा पूजामें राखत, इक घर बधिक परो।
पारस गुण अवगुण नहिं चितवे, कंचन करत खरो ॥ २ ॥
एक नदिया एक नार कहावत, मैलो हि नीर भरो।
जब मिलिकै दोउ एक बरन भए, सुरसरि नाम परो ॥ ३ ॥
एक जीव इक ब्रह्म कहावत, 'सूर' श्याम झगरो।
अबकी बेर मोहि पार उतारो, नहिं पन जात टरो ॥ ४ ॥

(१३)

सालगराम ! सुनो विनती मोरी, यो वरदान दया कर पाऊँ ॥
प्रातः समय उठ मज्जन करके, प्रेम सहित असनान कराऊँ ।
चन्दन धूप दीप तुलसी-दल, बरन-बरनके पुष्प चढ़ाऊँ ॥
आप विराजो प्रभु ! रतन सिंहासन, घण्टा, शंख, मृदंग बजाऊँ ।
एक बूँद चरणामृत लेके, कुटुम्ब सहित बैकुण्ठ पठाऊँ ॥
जो कुछ भोग मिले प्रभु मोकूँ, भोग लगाकर भोजन पाऊँ ।
जो कुछ पाप किया कायासे, परकम्पाके साथ बहाऊँ ॥
डर लागत मोहि भव-सागरको, जमके द्वार प्रभु ! मैं नहीं जाऊँ ।
'माधोदास' आस रघुबरकी, हरिदासनको दास कहाऊँ ॥

(१४)

नाथ ! थारै सरण पड़ी दासी ।
(मोय) भवसागरसे त्यार काढ्यो जनम-मरण फाँसी ॥ टेक ॥
नाथ ! मैं भोत कष्ट पाई ।
भटक-भटक चौरासी जूणी मिनख-देह पाई ।
मिटाद्यो दुःखाँकी रासी ॥ १ ॥
नाथ ! मैं पाप भोत कीना ।
संसारी भोगाँकी आसा दुःख भोत दीना ।
कामना है सत्यानासी ॥ २ ॥
नाथ ! मैं भगति नहीं कीनी ।
झूठा भोगाँकी तृसनामें उम्मर खो दीनी ।
दुःख अब मेटो अबिनासी ॥ ३ ॥
नाथ ! अब सब आसा टूटी ।
(थारे) श्रीचरणाँकी भगति एक है संजीवन-बूटी ।
रहूँ नित दरसणकी प्यासी ॥ ४ ॥

(१५)

कृष्ण मुरारी शरण तुम्हारी, पार करो नैया म्हारी ।
जन्म अनेक भये जग माहीं, कबहुँ न भगति करी थारी ॥ १ ॥
लख चौरासी भरमत-भरमत, हार गई हिम्मत सारी ।
अब उद्धार करो भव-भंजन, दीननके तुम हितकारी ॥ २ ॥
मैं मतिमन्द कछू नहिं जानत, पाप अनन्त किये भारी ।
जो मेरा अपराध गिनो तो, नाथ मिले पारावारी ॥ ३ ॥
तारे भगत अनेक आपने, शेष शारदा कथ हारी ।
बिनाभक्ति तारो तो तारो, अबकी बेर आई म्हारी ॥ ४ ॥

खान-पान विषयादिक भोगन, लपट रही दुनियाँ सारी।
'नारायण' गोविन्द भजन बिन, मुफ्त जाय उमरा सारी ॥ ५ ॥

(१६)

तोसे अरज करूँ साँवरिया, मोसे मन नहीं जीत्यो जाय।
मन मेरा यह चंचल भारी, छिन-छिन लेवे राड़ उधारी।
तोड़ फैंक दे ज्ञान पिटारी, ना कछु पार बसाय ॥ १ ॥
मन मेरा यह चंचल घोड़ा, सत्संगका मानत नहीं कोड़ा।
ज्ञान ध्यानका लंगर तोड़ा, पल-पल में हिन हिनाय ॥ २ ॥
मन हाथी नहीं काबू मेरे, न्हाय धोय सिर धूल बखेरे।
महावत को भी नीचा गेरे, जरा नहीं भय खाय ॥ ३ ॥
कैसे राखूँ मन को बस में, मन कर रक्खा मुझको बस में।
'तुलसी' का मन विषय कुरस में, पल-पल में ललचाय ॥ ४ ॥

(१७)

मंगल मूरति मारुत-नंदन, सकल असंगल-मूल निकंदन ॥
पवन-तनय संतन हितकारी, हृदय बिराजत अवधबिहारी ॥
माता-पिता गुरु गणपति नारद शिवा समेत शंभु शुक शारद ॥
चरण बंदि बिनवौं सब काहू, देहु रामपद नेहु निवाहू ॥
बंदौं राम लखन-वैदेही, जे 'तुलसी' के परम सनेही ॥

(१८)

अब तो निभायाँ सरेगी बाँह गहे की लाज।
समरथ शरण तुम्हारे सइयाँ सरब सुधारण काज ॥
भवसागर संसार अपार बल जामे तुम हो जहाज।
निराधार आधार जगत गरू तुम बिन होत अकाज ॥
जुग जुग भीर हरी भगतन की दिनी मोक्ष समाज।
मीरा शरण गही चरणन की लाज राखो महाराज ॥

(१९)

दीनन दुख हरण देव संतन सुखकारी ॥ टेक ॥
अजामील गीध व्याध इनमें कहो कौन साध।
पंछी हूँको पद पढ़ात गणिका सी तारी ॥ १ ॥
ध्रुव के सिर छत्र देत प्रह्लाद को उबार लेत।
संत हेतु बाँधो सेतु लंकपुरी जारी ॥ २ ॥
तंडुल देत रीझ जात सागपात सों अघात।
गिनत नहीं जूठे फल खाटे मीठे खारी ॥ ३ ॥
गज को जब ग्राह ग्रस्यो दुशासन चीर खस्यो।
सभाबीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी ॥ ४ ॥
इतने में हरि आय गए बसनन आरूढ़ भये।
सूरदास द्वारे ठाढ़ो आन्धरो भिखारी ॥ ५ ॥

(२०)

हे गोविन्द राखो शरण अब तो जीवन हारे।
नीर पीवन हेतु गयो सिंधु के किनारे।
सिंधु बीच बसत ग्राह चरणधर पछारे ॥
चार प्रहर युद्ध भयो ले गयो मझधारे।
नाक कान डूबन लागे कृष्ण को पुकारे।
द्वारका से शब्द सुनि गरुड़ चढ़ि पधारे।
ग्राह को हरि मारि के गजराज को उबारे ॥
सूरश्याम मगन भये नन्द के दुलारे।
तेरो मेरो न्याव होसो यमके दुआरे ॥

(२१)

कल कुँडल कान्ति कपोलन पै बिखरी अलकावलिया घुँघराली।
अधरामृत स्वाद समुद्र भरी मुसकान छटा अति ही सुखकारी ॥

करती रहे वृष्टि कृपा की सदा करुणावरुणालय दृष्टि तुम्हारी।
शशिमण्डल सो मुखमण्डल ये जिसे देख बनी हम दासी तुम्हारी॥

(२२)

जब सौंप दिया सब भार तुम्हें,
फिर मारो या त्यारो कहें हम क्या।
अब आप ही प्यारे विचार करो,
इस दीन दुखी को सहारा है क्या।
मँझधार में लाके डुबाओ हमें,
चाहे पार लगाओ किनारे पे ला।
हम तेरे हैं तेरे रहेंगे सदा,
अब और किसी को निहारेंगे क्या॥

वियोग

(१)

मोहे तज कहाँ जात हो प्यारे ॥ टेर ॥
हृदय-निकुंज आप अब बैठो। जल तरंगवत होत न न्यारे ॥
तुम हो प्राण जीवन-धन मेरे। तन-मन-धन सब तुम पर वारे ॥
छिपे हो कहाँ जाय मन-मोहन। श्रवण-नयन-मन संग तुम्हारे ॥
फँसे प्रेम-रस फंद प्राण मन। प्रेम फंद रस सूरत बिसारे ॥
'सूर' श्याम अब मिले ही बनेगी। तुम हो सरवस मोपर हारे ॥

(२)

आव आव भगतोंकी भीड़ी आयाँ सरसी रे, मोहन वेगो आव।
घोर घटा म्हारे शिर पै छाई सूजत नाहिं किनारा रे।
डगमग डोले नाव किनारे, पार लगाओ रे ॥ १ ॥
जायें कहाँ अब तुम ही बताओ, तुम बिन कौन हमारा रे।
दुखियोंका दुख दूर करन को, तुम ही सहारा रे ॥ २ ॥
एक बार भारत में फिर से, आजा कृष्ण मुरारी रे।
जल्दी लो अवतार जगत में हो उजियारा रे ॥ ३ ॥
गोकुल वाला गउओं का प्यारा, तुम बिन कौन रखवारा रे।
बिगड़ी आन सूधारो वंकट दास तुम्हारा रे ॥ ४ ॥

(३)

भूल बिसर मत जान कन्हैया, मेरी ओड़ निभाना जी ॥टेर॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुण्डल झलकत काना जी।
वृन्दावन की कुञ्ज-गलिन में, मोहन वंशी बजाना जी ॥ १ ॥
हमरी तुमसे लगन लगी है, नित प्रति आना जी।
घट-घट वासी अन्तरजामी, प्रेम का पंथ निभाना जी ॥ २ ॥

जो मोहन मेरो नाम न जानो, मेरो नाम दिवाना जी ॥
हमरे आँगन तुलसी का विरवा, जिसके हरे हरे पाना जी ॥ ३ ॥
जो काना मेरो गाँव न जानो, मेरो गाँव बरसाना जी ।
सूरज सामी पोल हमारी, चन्दन चौक निसाना जी ॥ ४ ॥
या तो ठाकुर दरसन दीजो, नहीं तो लीजो प्राना जी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरणों में लिपटाना जी ॥ ५ ॥

(४)

दरस म्हारे बेगि दीज्यो जी !
ओ जी ! अन्तरजामी ओ राम ! खबर म्हारी बेगि लीज्यो जी
आप विना मोहे कल ना पड़त है जी !
ओ जी ! तड़फत हूँ दिन रैन नैन में नीर ढले छै जी
गुण तो प्रभूजी मों में एक नहीं छै जी !
ओ जी ! अवगुण भरे हैं अनेक, औगुण म्हाँरा माफ करीज्यो जी
भगत बछल प्रभु विड़द कहायो जी !
ओ जी ! भगतन के प्रतिपाल, सहाय आज म्हाँरी बेगि करज्यो जी
दासी मीरा को विनती छै जी !
ओ जी ! आदि अन्त की ओ लाज, आज म्हारी राख लीज्यो जी !

(५)

अरज म्हाँरी जाय कहीज्यो जी ।
ऊधोजी ! मोहन ने समझाय, वृन्दावन वेगि ल्याज्यो जी ॥टेर॥
वृन्दावन फीको लागे जी !
ऊधोजी ! नैना देख्यो नहीं जाय, आग उर भीतर जागे जी ॥
यसोदा अति अकुलावे जी !
ऊधोजी ! नन्दजी करत विलाप, मोहन कब दर्श दिखावे जी ॥

राधा याने याद करे छै जी !
ऊधोजी ! छिन छिन करत विलाप, नैणाँ में नीर वहे छै जी ॥
ऐसी हम नहि जानी जी !
ऊधोजी ! अध विच गये छिटकाय, पीड़ म्हारी नाहि पिछानी जी ॥
दासी म्हारी वैरण भई छै जी !
ऊधोजी ! मोहन ने लियो मोय जोय जित्त रोय रह्यो छै जी ॥
स्याम विना सेज अलूँणी !
ऊधोजी ! सिर पर डारूँगी खाख, जाय वन ताँपँ घूणी जी ॥
ऊधोजी ! थाँरा गुण भूलँ मैं नाहिं, सूरत झटपट दिखलाओ जी ॥

(६)

नातो नामको जी म्हाँसू तनक न तोड़्यो जाय ॥टेर॥
पाँना ज्यूँ पीली पड़ी जी लोग कहे पिंड रोग।
छाने लाँघण म्हे किया जी राम मिलन की जोग ॥ १ ॥
बावल वैद बुलाइया जी पकड़ दिखाई म्हारी बाँह।
मूरख वैद मरम नहिं जाणे, कसक कलेजे माँह ॥ २ ॥
जावो वैद घर आपणे जी म्हाँरो नाँव न लेय।
मैं तो दाझी विरह की जी तू काहे कूँ ओषद देय ॥ ३ ॥
माँस गल गल छीजिया जी करके रहया गल आहि।
आँगलियाँ री मूँदड़ी (म्हारे) आवन लागी बाँहि ॥ ४ ॥
रह रह पापी पपीहड़ा रे पीव को नाम न लेय।
जे कोई विरहण सम्हाले तो पीव कारण जिव देय ॥ ५ ॥
खिण मंदिर खिण आँगणे रे खिण-खिण ठाडी होय।
घायल ज्यूँ घूमूं खड़ी, म्हारी विथा न बूझे कोय ॥ ६ ॥
काढ़ कलेजो मैं धरूँ रे, कागा तू ले जाय।
ज्याँ देसाँ म्हारो पीव बसे रे, वो देखे तू खाय ॥ ७ ॥

म्हारे नातो नाँव को जी, और न नातो कोय।
मीरा व्याकुल विरहणी जी हरि दरसण दीजो मोय ॥ ८ ॥

(७)

साँवरिया अरज मीरा की सुण रे।
में नुगरी म्हारो सुगरों साँवरियो, ओगुण गारी रा कुणरे ॥ १ ॥
राणा विष का प्याला भेज्या, नित चरणामृत को पण रे।
तारण वारो म्हारो स्याम धणी है, मारण वारो कुण रे ॥ २ ॥
निस दिन बैठी पंथ निहारूँ, व्याकुल भयो म्हारो मन रे।
म्हारे तो दिल में ऐसी भावे, जाय बसूँ माधोवन रे ॥ ३ ॥
निस दिन मोहे बिरह सतावे, लकड़ी में लाग्यो घुण रे।
जैसे जल विन मछली तड़पे, वैसे ही म्हारी मन रे ॥ ४ ॥
राम समा म्हारो श्याम विराजे, जाँ पे वारूँ तन-मन रे।
मीरा के प्रभु गिरधर मिलिया, ओराँ ने ध्यावे कुण रे ॥ ५ ॥

(८)

म्हाने साची बताओ दीनानाथ विरज कब आवोगां ॥टेर॥
फूलाँ भरी हैं छावड़ी जी माला पोईचार।
यह माला साँवरियो पहर सहश्र गोपीयारो ॥ दीनानाथ ॥
कोरी कुलड़ियांमें दही जमायो मिसरी को जावण देय।
पत्ते को तो दुनो बगायो भोग लगावो ॥ दीनानाथ ॥
पाना भरी है छावड़ी जी बीड़ी वान्धी चार।
यह बीड़ी साँवरियो चाव सहश्र गोपी यारो ॥ दीनानाथ ॥
चुन चुन फुलड़ां सेज बिछाई अंतर दियो छिटकाय।
यह सेजां साँवरियो सोव सहश्र गोपीयारो ॥ दीनानाथ ॥
चूँगत छोड़ा वाछड़ा जी रामत छोड़ी गाय।
वृन्दावन में बेगा पधारो रास रचावो ॥ दीनानाथ ॥

चन्द्रसखी की विनती जी सुनियो चित्त लगाय।
फूलदोल पर आया रीजो नहीं तो तजूँगी मैं पराण ॥ दीनानाथ ॥

(९)

प्रभुजी तुम दर्शन विन मोय, घड़ी चैन नहीं आवड़े ॥ टेर ॥
अन्न नहीं भावे नींद न आवे, विरह सतावे मोय।
घायल ज्यूँ घूमू खड़ी रे म्हारो दर्द न जाने कोय ॥ १ ॥
दिन तो खाय गमायो री, रैन गमाई सोय।
प्राण गँवाया झूरतां रे, नैन गँवाया दोनु रोय ॥ २ ॥
जो मैं ऐसा जानती रे, प्रीत कियाँ दुःख होय।
नगर ढुँढेरौ पीटती रे, प्रीत न करियो कोय ॥ ३ ॥
पन्थ निहारूँ डगर भुवारूँ, ऊभी मारग जोय।
मीराँ के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलयाँ सुख होय ॥ ४ ॥

(१०)

रामा रामा रटते रटते बीती रे उमरिया,
रघुकुल नन्दन कब आवोगे भिलनीकी डगरिया ॥ टेर ॥
मैं भिलनी सबरी की जाई, भजन भाव नहीं जानूँ रे,
राम तुम्हारे दरसन के हित, वन में जीवन पालूँ रे,
चरण कमल से निर्मल कर दो दासीकी झुँपड़िया ॥ १ ॥
रोज सवेरे बन में जाकर, रस्ता साफ कराती हूँ,
अपने प्रभु के खातिर बन से, चुन-चुन के फल लाती हूँ,
मीठे-मीठे बेरन की भर ल्याइ मैं छबड़िया ॥ २ ॥
सुन्दर श्याम सलोनी सूरत, नैनु बीच बसाऊँगी,
पदपंकजकी रज धर मस्तक, चरणों में सीस नवाऊँगी,
प्रभुजी मुझको भूल गये क्या, ल्यो दासीकी खबरिया ॥ ३ ॥

नाथ तुम्हारे दरसन के हित मैं अवला एक नारी हूँ,
दरसन बिन दोउ नैना तरसे, दिलकी बड़ी दुख्यारी हूँ,
मुझको दरसन देवो दयामय, डालो म्हैर नजरिया ॥ ४ ॥

(११)

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ,
चरणाँ में दासी कब की खड़ी ॥ टेर ॥
सज्जन दुश्मन हो गया प्रभु, लाजूँ खड़ी-खड़ी,
आप बिना मेरो कुण धणी, अध बीच नैया मेरी अटक पड़ी ॥
विरहका होल उठै घट भीतर, सुकूँ खड़ी-खड़ी,
पलक-पलक मेरे बरस बरोबर, मुश्किल होगी दाता एक घड़ी ॥
हार सिंगार सभीमें त्यागा और मोतियनकी लड़ी-लड़ी,
ज्ञान ध्यान हृदय से भाग्या प्रेम कटारी हृदय रलक पड़ी ॥
यो मन मस्त कयो नहीं माने, बदलै घड़ी-घड़ी
बार-बार गावे मीराँ बाई, प्रभु के चरणों में दासी लिपट पड़ी ॥

(१२)

कबहूँ मिलोगे दीनानाथ! हमारे, कबहूँ मिलोगे राधेश्याम! हमारे
कबहूँ मिलोगे राम, कबहूँ मिलोगे श्याम, कबहूँ मिलोगे चितचोर हमारे॥
जैसे मिले प्रह्लाद भगतको, खम्भ फाड़ हिरनाकुश मारे।
जैसे मिले प्रभु भक्त-विभीषण, लंका जार निशाचर मारे ॥ २ ॥
जैसे मिले प्रभु जनकसुताको, तोड़ा धनुष भूप सब हारे।
जैसे मिले प्रभु द्रुपदसुताको, खैंचत चीर दुशासन हारे ॥ ३ ॥
जैसे मिले प्रभु मीराबाईको, जहरको प्यालो अमृत कर डारे।
जैसे मिले प्रभु नरसीभगतको, भात भरन हरि आप पधारे ॥ ४ ॥
जैसे मिले प्रभु बली राजाको, चार मास द्वारे पर ठाड़े।
सूरदासको कबहूँ मिलोगे, टप-टप टपकत नयन हमारे ॥ ५ ॥
कबहूँ मिलोगे माखन चोर हमारे, कबहूँ मिलोगे गोपीनाथ हमारे ?॥

(१३)

निशि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहत पावस-ऋतु हम पर, जबतें श्याम सिधारे ॥ १ ॥
अंजन थिर न रहत अँखियन में, कर कपोल भये कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे ॥ २ ॥
आँसू सलिल भये पग थाँके, बहे जात सित-तारे।
'सूरदास' अब डूबत है ब्रज, काहे न लेत उबारे ॥ ३ ॥

(१४)

अँखियाँ हरि-दरशन की प्यासी।
देख्यो चाहत कमल नैनको, निशिदिन रहत उदासी ॥ १ ॥
केसर तिलक मोतिनकी माला, बृन्दावनके वासी।
नेह लगाय त्यागि गये तृन सम, डारि गये गल फाँसी ॥ २ ॥
काहुके मनकी को जानत, लोगनके मन हाँसी।
'सूरदास' प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, लेहों करवत कासी ॥ ३ ॥

(१५)

ऊधो ! मधुपुरका बासी।
म्हारो बिछड़्यो स्याम मिलाय, बिरहकी काट कठण फाँसी ॥
स्याम विनु चैन नहीं आवे।
म्हारो जबसे बिछड़्यो स्याम, हीवड़ो उझल्यो ही आवे ॥
छाय रही व्याकुलता भारी।
म्हारे स्याम-विरहमैं आज नैनसैं रह्यौ नीर जारी ॥
स्याम बिनु ब्रज सूनो लागै।
सूनी कुंज तीर जमुनाको, सब सूनो लागै ॥
गोठ-वन स्याम बिना सूनो।
म्हारै एक-एक पल जुग सम बीते, बिरह बढ़ै दूनो ॥

ऊधो ! अरज सुणो म्हारी ।
थारो गुण नहि भूलाँ कदे, मिलायो मोहन बनवारी ॥

(१६)

आली रे ! मेरे नैणाँ बाण पड़ी ॥
चित चढ़ी मेरे माधुरी-मूरत, उर बिच आन अड़ी ।
कबकी ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी ॥ १ ॥
कैसे प्राण पिया बिनु राखूँ, जीवन-मूल-जड़ी ।
'मीरा' गिरधर हाथ बिकानी लोग कहें बिगड़ी ॥ २ ॥

(१७)

म्हारे जनम मरणरा साथी, थाँने नहिं बिसरूँ दिन-राती ॥
थाँ देख्याँ बिन कल न पड़त है, जाणत मेरी छाती ।
ऊँचे चढ़-चढ़ पंथ निहारूँ, रोय-रोय अँखियाँ राती ॥ १ ॥
यो संसार सकल जग झूठो, झूठो कुलरा न्याती ।
दोउ कर जोड़्याँ अरज करूँ छूँ, सुण लीज्यो मेरी बाती ॥ २ ॥
यो मन मेरो बड़ो हरामी ज्यूँ मदमातो हाथी ।
सतगुरु हाथ धर्‌यो सिर ऊपर आँकुस दै समझाती ॥ ३ ॥
पल-पल पिवको रूप निहारूँ, निरख-निरख सुख पाती ।
मीराके प्रभु गिरधर नागर, हरि-चरणाँ चित राती ॥ ४ ॥

(१८)

आज्यो आज्यो जी साँवरिया ! म्हारे देश, ऊभी जोऊँ वाटड़ली
सावण आवण कह गया जी, कर गया कौल अनेक ।
गिनताँ गिनताँ घिस गई जी, म्हारी आँगलियाँरी रेख ॥ १ ॥
कागद नहीं स्याही नहीं जी, नहीं किरणो प्रवेश ।
पंछीको परवेश नहीं है, किस विध लिखूँ सन्देश ॥ २ ॥

साँवराने ढूँढण मैं गई जी, कर जोगणका भेष।
ढूँढ़त ढूँढ़त जुग भया जी, धोला हो गया केश ॥ ३ ॥
मोर मुकुट तन काछनी जी, घुँघरवारा केश।
मीराने गिरधर मिल्या जी, धर नटवरका भेष ॥ ४ ॥

(१९)

वनमें देख्या वनवासी, वाँरी मुख देख्याँ दुःख जासी ए माँय !
भोज-पत्रके वस्त्र पहिरे, वे तो अपने नगर होय आसी ए माँय !
नयनोंसे सखी निरखन लायक, वाने कौन किया वनवासी ए माँय !
धनवारी मातपितावाँरा धन है, वे तो हिवड़ो फाट मर जासी ए माँय !
तुलसीदास आस रघुवरकी, वारे चरणकमल चित लासी ए माँय !

(२०)

राम मिलणरो घणो उमावो, नित उठ जोऊँ वाटड़ियाँ।
दरस विना मोहि कछु न सुहावै, जक न पड़त है आँखड़ियाँ ॥
तड़फत तड़फत बहु दिन बीते पड़ी विरह की फाँसड़ियाँ।
अब तो वेग दया कर प्यारा मैं छूँ थारी दासड़ियाँ ॥
नैण दुखी दरसण कूँ तरसैं नाभि न बैठे सासड़ियाँ।
रात दिवस हिय आरत मेरो कब हरि राखै पासड़ियाँ ॥
लगी लगन छुटण की नाहीं अब क्यूँ कीजे आँटड़ियाँ।
मीराके प्रभु कब र मिलोगे पूरो मनकी आसड़ियाँ ॥

(२१)

कोई कहियौ रे प्रभु आवनकी, आवनकी मनभावनकी ॥टेक॥
आप न आवै लिख नहिं भेजै बाण पड़ी ललचावनकी।
ए दो नैण कह्यो नहिं मानै, नदियाँ बहै जैसे सावनकी ॥ १ ॥
कहा करूँ कछु नहिं बस मेरो, पाँख नहीं उड़ जावनकी।
मीरा कहे प्रभु कब र मिलोगे, चेरी भई हूँ तेरे दाँवनकी ॥ २ ॥

(२२)

थान काँई काँई कह समझाऊँ, म्हारा वाला गिरधारी।
पूर्व जन्मकी प्रीति हमारी, अब नहीं जात बिसारी॥ १॥
सुन्दर बदन निरखियों जबते, पलक न लागे म्हाँरी।
रोम-रोममें अँखियाँ अटकी, नख सिखकी बलिहारी॥ २॥
हम घर बेग पधारो मोहन! लग्यो उमावो भारी।
मोतियन चौक पुरावाँ वाला, तन मन थाँपर वारी॥ ३॥
म्हारो सगपण थाँ से गिरधर! मैं हूँ दासी थाँरी।
चरण-शरण मोहे राखो साँवरा, पलक न कीजे न्यारी॥ ४॥
वृन्दावनमें रास रचायो, संगमें राधा-प्यारी।
मीराँ कह गोप्याँरो वालो, हमरी सुधहू बिसारी॥ ५॥

(२३)

ऐ श्याम! तेरी बँसरी ने क्या सितम किया?
तनका रहा न होश मेरे मनको हर लिया॥ १॥
वंशीकी मधुर टेर सुनी प्रेम-रस-भरी।
ब्रज नार लोक-लाज काम-काज तज दिया॥ २॥
नभमें चढ़े विमान खड़े देवगण सुने।
मुनियोंका छूटा ध्यान प्रेम-भक्ति-रस पिया॥ ३॥
पशुओंने तजी घास पंक्षी मौन हो रहे।
जमुनाका रुका नीर पवन धीर हो गया॥ ४॥
ऐसी बजाई बँसरी सब लोक वश किया।
'ब्रह्मानन्द' दरस दीजिये, मोहे रास के रसिया॥ ५॥

(२४)

थे तो पलक उघाड़ो दीनानाथ,
मैं हाजिर-नाजिर कदकी खड़ी॥ टेर॥

साजनियाँ दुसमण होय बैठ्या,
सबने लगूँ कड़ी।
तुम बिन साजन कोई नहीं हैं,
डिगी नाव मेरी समुद अड़ी ॥ १ ॥
दिन नहिं चैन रैण नहिं निंदरा,
सूखूँ खड़ी खड़ी।
बाण बिरहका लग्या हियेमें,
भूलूँ न एक घड़ी ॥ २ ॥
पत्थरकी तो अहिल्या तारी,
बनके बीच पड़ी।
कहा बोझ मीरामें कहिये,
सौ पर एक धड़ी ॥ ३ ॥

(२५)

दरस बिनु दूखण लागे नैन।
जबसे तुम बिछुड़े प्रभु मोरे कबहु न पायो चैन ॥
सबद सुणत मेरी छतियाँ काँपै मीठे लागैं बैन।
बिरह कथा काँसूँ कहूँ सजनी बह गई करवत ऐन ॥
कल न परत पल हरि मग जोवत भई छमासी रैन।
मीराके प्रभु कब र मिलोगे दुख मेटण सुख दैन ॥

(२६)

किशोरी मोहे कब अपनावोगी ?
निज कर-कमल धर मस्तक पर, श्रीवृन्दावन बसावोगी ॥१॥
सुन्दर रूप स्वरूप आपनो, कबतो मोहि दिखावोगी ॥२॥
अली किशोरी नाम साचो कर, रसिकन माँय मिलावोगी ॥३॥

(२७)

तुम बिन मेरी कौन खबर ले, गोवरधन गिरधारी।
क्रीट मुकुट पीताम्बर सोहे, कुण्डलकी छवि न्यारी ॥ १ ॥
तन-मन-धन सब तुम पै वारूँ, राखो लाज हमारी।
इन नयनमें तुम्हीं बसे हो, चरण कमल बलिहारी ॥ २ ॥
भिलनीजीके बेर बसे मन, स्वाद लिया था भारी।
कर दीने धनवान सुदामा, तुमने गणिका तारी ॥ ३ ॥
गौतम ऋषिकी नारी अहिल्या, रजसे स्वर्ग सिधारी।
मीराके प्रभु गिरधर-नागर, जनम-जनम दासी थारी ॥ ४ ॥
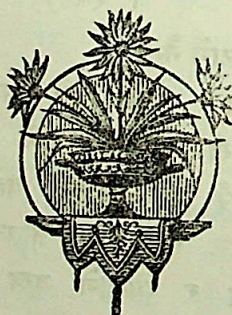
लीला-गान

(१)

राधा श्रीवृषभान दुलारी, प्यारी वंसी दीज्यो मोय ॥टेर॥
या वंसी विन चैन न पाऊँ, बंसी के वल गाय चराऊँ
या के वल गिरिराज उठाऊँ, बंसी की धुन तीन लोक में
सुरनर नाग समोय ॥१॥

कैसी बंसी श्याम तुम्हारी, हमने नेक ना नैन निहारी
तुम छलिया हम भोरी भारी, झूठो नाम लगावो रे लाला
वन में खोई होय ॥२॥

तुमने बंसी लई हमारी, तुम सब सुघड़, चतुर व्रज नारी
कैसे जानूँ भोरी भारी, तनिक दही के कारणै वाँ दिन
गारी दीनी मोय ॥३॥

चोरी करे खाय सो गारी, यहाँ को चेरी वसै तुम्हारी
आँख दिखावो पीरी-कारी, आधी रात भगे मथुरा ते
लाज न आवे तोय ॥४॥

भगतन के हित यह देह हमारी, तुम का जानो जाति गँवारी
बंसी तीन लोक ते न्यारी, सुर नर मुनि ब्रह्मादिक जाँको
पार न पायो कोय ॥५॥

(२)

जो रस बरस रह्यो बरसाने सो रस तीन लोकमें नाहिं ।
तीन लोकमें नाहिं वो रस बैकुण्ठहूमें नाहिं ॥ टेक ॥
सँकरी गली बनी पर्वतकी, दधि लै चली कुमरि कीरतिकी ।
आगे गाय चरै गिरधरकी, दीने सखा सिखाय ॥जो रस०॥

दैजा दान कुमरि मोहनकौं, तव छोड़ूँ तेरे गोहनकौं।
राज यहाँ वनमें गिरिधरको, दान लइँगे धाय ॥जो रस०॥
इनके संग सखी मदमाती, उनके संग सखा उत्पाती।
घेरि लई ग्वालिन रसमाती, मनमें अति हरषाय ॥जो रस०॥
सुर तैंतीसनकी मति बोरी, भजिकै चले विरजको ओरी।
देखि देखि या व्रजकी खोरी, ब्रह्मादिक ललचाय ॥जो रस०॥

(३)

आज अयोध्या की गलियों में घूमे जोगी मतवाला,
अलख निरंजन खड़ा पुकारे, देखूँगा दशरथ लाला ॥टेक॥
शैली सिंगी लिये हाथ में, अरु डमरू त्रिशूल लिये,
छमक छमाछम नाचे जोगी, दरस की मन में चाह लिये,
पगके घुंघरू छमछम बाजे कर में जपते हैं माला ॥ १ ॥
अंग भभूत रमावे जोगी, वाघम्बर कटि में सोहे,
जटा जूट में गंग विराजे, भक्त जनों के मन मोहे,
मस्तक पर श्रीचन्द्र विराजे गल में सर्पन की माला ॥ २ ॥
राज द्वार पे खड़ा पुकारे, बोलत है मधुरी वानी,
अपने सुतको दिखा दे मैया, ये योगी मनमें ठानी,
लाख हटाओ पर ना मानूँ, देखूँगा तेरा लाला ॥ ३ ॥
मात कौशल्या द्वार पे आई, अपने सुत को गोद लिये,
अति विभोर हो शिव जोगी ने बाल रूप के दरस किये,
चले सुमिरत राम नाम को, कैलासी काशी वाला ॥ ४ ॥

(४)

श्रीकृष्ण बुलावे, झूलण चालो राधा वाग में ॥टेर॥
झूलण चालो वाग माँयने, सज सोला सिंगार,
तरह तरह का पहर आभूषन, गल मोतियन को हार ॥ १ ॥

मलियागिरि को बन्यो हिन्डोरो, लग्या रेशम तार,
झूले आप झुलावे मोहन, गावे राग मल्हार ॥२॥
सदा सजीली बागकी राधे, खिल गई केशर क्यार,
चम्पा चमेली खिली केतकी, भँवर करे गुँजार ॥३॥
दादुर मोर पपीहा बोले, पीव-पीव करे पुकार,
घन गरजे और बिजली चमके, शीतल पड़े फुवार ॥४॥
शिव सनकादिक ब्रह्मा ध्यावे, कोईय न पायो पार,
दास नारायण शरण आपकी, करियो बेड़ा पार ॥५॥

(५)

आज ठाडो री बिहारी यमुना तट पे,
मत जइयो री अकेली कोई पनघट पे ॥टेर॥
मुकुट लटक भृकुटी की मटक,
मन रयोरी अटक कटि पीरी पट पे ॥१॥
नन्द जु को छोना लखि धीरज रह्यो ना,
बीर ऐसो कछु टोना नटवर नट पे ॥२॥
गुरुजन त्रास कैसे बसै बृजवास,
मन बन गयो दास घुँघरारी लट पे ॥३॥
छुटी कुल लाज गोपी आयी भाज भाज
रास रसिया को रास आज वंशीवट पे ॥४॥

(६)

मैया मोरी मैं नेहिं माखन खायो ॥
भोर भयो गैयनके पाछे, मधुवन मोहिं पठायो।
चार पहर वंशीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो ॥ १ ॥
मैं बालक बहिंयनको छोटो, छींको किहि विधि पायो।
ग्वाल-बाल सब वैर परे हैं, वरबस मुख लपटायो ॥ २ ॥

तू जननी मनकी अति भोरी, इनके कहे पतियायो ।
जिय तेरे कछु भेद उपजिहै, जानि परायो जायो ॥ ३ ॥
यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहि नाच नचायो ।
'सूरदास' तव विहँसि यसोदा, लै उर-कंठ लगायो ॥ ४ ॥

(७)

देखो री एक बाला जोगी, द्वार हमारे आया है री ॥ टेर ॥
बाघम्बरका ओढ़ दुशाला, शेषनाग लपटाया है री ॥ १ ॥
माथे वाके तिलक चन्द्रमा, मोतियन थाल भराया है री ।
जा योगी अपने आश्रमको, मेरा कान्ह डराया है री ॥ २ ॥
ना चहिये तेरे हीरा मोती, ना चहिये तेरी माया है री ।
तेरे लालके दरश दिखा, साधू काशीसे आया है री ॥ ३ ॥
ले बालक निकली नन्दरानी, योगी दर्शन पाया है री ।
सात बेर परिक्रमा करके, सिंगी नाँद बजाया है री ॥ ४ ॥
सूरदास वैकुण्ठधाममें, धन्य यसोमति माया है री ।
तीन लोकके कर्ता हर्ता, तेरी गोदी आया है री ॥ ५ ॥

(८)

आज हरि आये विदुर-घर पावणा ॥ टेक ॥
विदुर नहीं घर थी विदुरानी, आवत देखे सारंग पाणी ।
फूली अंग समावे न चिन्त्या, भोजन कहाँ जिमावणा ॥ १ ॥
केला भोत प्रेमसों ल्याई,गिरी-गिरी सब देत गिराई ।
छिलका देत श्याम-मुख माही, लागे भोत सुहावणा ॥ २ ॥
इतने माँय विदुरजी आये, खारे-खोटे वचन सुनाये ।
छिलका देत श्याम-मुख माँहीं, कहाँ गमाई भावना ॥ ३ ॥
केला लिया विदुर कर माँहीं, गिरी देत गिरधर मुख माँही ।
कहे कृष्णजी सुनो विदुरजी! वो स्वाद नहीं आवणा ॥ ४ ॥

बासी-कूसी, रूखे-सूखे, हम तो विदुरजी ! प्रेमके भूखे।
शम्भु सखी धन-धन विदुरानी, भक्तन मान बढ़ावणा ॥ ५ ॥

(९)

नाचे नन्दलाल, नचावे हरिकी मैया ॥ नाचे० ॥
मथुरामें हरि जन्म लियो है, गोकुलमें पग धरो री कन्हैया ॥
रुनुक-झुनुक पग नूपुर वाजे, ठुमुक-ठुमुक पग धरो री कन्हैया ॥
धोतो न बाँधे जामो न पहिरे, पीताम्बरको बड़ो री पहरैया ॥
टोपी न ओढ़े लाला फैंटा न बाँधे, मोर-मुकुटको बड़ो री ओढ़ैया ॥
शाल न ओढ़े दुशाला न ओढ़े, काली कमरियाको बड़ो री ओढ़ैया ॥
दूध न भावे याने दही न भावे, माखन मिसरीको बड़ो री खवैया ॥
खेल न खेले खिलौना न खेले, वंसरीको लाला बड़ो री बजैया ॥
चन्द्रसखी भज बाल कृष्णछवि, हँस-हँस कण्ठ लगावे हरिकी मैया ॥

(१०)

यो धनुष बड़ो विकराल, रघुवर छोटो-सो ।
बड़ा कठिन पण पिता कियो, कोई रँच न कियो विचार ॥रघु०॥
कमल जिसो तन राम रो, यो धनुष बजर सो जान ॥रघु०॥
धनुष चढ़ो चाहे ना चढ़ो, म्हारो राम भँवर-भरतार ॥रघु०॥
छोटो-छोटो मती कहो, यो पूरण ब्रह्म औतार ॥रघु०॥
सूरज छोटो सो लगै, सब जगमें करे प्रकाश ॥रघु०॥
रघुवर चाप चढ़ावसी, सखि ! इनमें फेर न सार ॥रघु०॥

(११)

होरी खेलन आयो श्याम, आज याहि रंगमें बोरो री ।
रँगमें बोरो री कन्हैयाको, रंगमें बोरो री ॥ १ ॥
कोरे-कोरे कलश मँगाओ, यामे केशर घोरो री ।
मुख ते केशर मलो, करो कारे ते गोरो री ॥ २ ॥

लोक लाज-मरजाद सबै, फागनमें तोरो री।
हाथ जोड़ जब करे विनती, तब याहे छोरो री ॥ ३ ॥
हरे बाँसकी बाँसुरिया, याहे तोर मरोरो री।
चन्द्रसखी यों कहे आज बन बैठ्यो भोरो री ॥ ४ ॥

(१२)

होरी खेलत है गिरधारी।
मुरली चंग बजत ढफ न्यारो, सँग जुवती ब्रजनारी ॥
चंदन केसर छिड़कत मोहन, अपने हाथ बिहारी ॥
भरि-भरि मूठ गुलाल लाल चहुँ, देत सबनपै डारी ॥
छैल छबीले नवल कान्ह सँग, स्यामा प्राणपियारी ॥
गावत चार धमार राग तहँ, दै दै कल करतारी ॥
फाग जु खेलत रसिक साँवरो, बाढ्यो रस ब्रज भारी ॥
मीरा कूँ प्रभु गिरधर मिलिया, मोहनलाल बिहारी ॥

(१३)

आछो दधि दूँगी रे साँवरिया थोड़ी मुरली बजाय, दधि दूँगी ॥
ऐसी बजाय जैसी जमुना ऊपर बाजी रे, बहतो नीर तुरंत थम जाय ॥
ऐसी सुनाय जैसी माधोवनमें बाजीरे, चरती धेनु मगन हो जाय ॥
ऐसी बजाय जैसी वृन्दाबनमें बाजी रे, संगकी सहेली मगन हो जाय ॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छवि, हरिके चरणमें चित्त लगाय ॥

(१४)

ग्वालिन मत पकड़े मोरी बहियाँ,
मोरी दूखे नरम कलैया ॥ टेर ॥
तेरो मैं माखन नहीं खायो,
अपने घरके धोखेमें आयो।
मटकी ते नहीं हाथ लगायो, हाथ छोड़ दे
हा-हा खाऊँ, तेरी लेऊँ बलैया ॥ १ ॥

खोल किविड़िया तू गई पानी,
भूल करी तूँ अब पछतानी।
मो सँग कर रही ऐंचातानी, झूठो नाम
लगायो तैंने मेरो, घरमें घुसी बिलैया ॥ २ ॥
तोको नेक दया नहीं आवे
मो सूधेको दोष लगावे।
घर में बुलाके चोर बनावे, हाथ छोड़ दे
देरी होत है, दूर निकसि गई गैया ॥ ३ ॥
आज छोड़ दे सौगन्ध खाऊँ,
फेर न तेरे घरमें आऊँ।
नित तेरी गागर ऊचकाऊँ, हाथ छोड़ दे
देरी होत है, बोल रह्यो बलभैया ॥ ४ ॥

(१५)

गिरिधरकी वंशी प्यारी जी, गिरिधरकी ॥ टेक ॥
मोर-मुकुट-पीताम्बर सोहै कुण्डलकी छवि न्यारी जी।
यमुना तटपर धेनु चरावे, ओढ़े कामर कारी जी ॥ १ ॥
गल-पुष्पनकी माल विराजे, हिवड़े हार हजारी जी।
कुंज-गलिनमें रास रच्यो है, गोपियन संग बनवारी जी ॥ २ ॥
लूट-लूट माखन-दधि खावे, रोक लई ब्रजनारी जी।
हाथ लकुट काँधे कामरिया, साँवरि सूरत जादू डारी जी ॥ ३ ॥
प्रीति लगाकर मन हर लीन्यो, नटवर कुंज-बिहारी जी।
ललिता दासी जनम-जनमकी, चरण-कमल बलिहारी जी ॥ ४ ॥

(१६)

तेरे लालाने ब्रज-रज खाई, यशोदा सुन माई ॥ टेर ॥
अदभुत खेल सखन सँग खेलो, छोटो-सो माटीको ढेलो।
तुरत श्यामने मुखमें मेलो, याने गटक-गटक गटकाई ॥ १ ॥

दूध दहीको कबहुँ न नाटी, क्यों लाला तैंने खाई माटी।
यशोदा समझा रही ले साँटी, याने नेक दया नहीं आई ॥ २ ॥
मुखके माँहि आँगुली मेली, निकल पड़ी माटीकी ढेली।
भीर भई सखियनकी भेली, याने देखे लोग लुगाई ॥ ३ ॥
मोहनको मुखड़ो फरवायो, तीन लोक वा में दरशायो।
तब विश्वास यशोदहिं आयो, यो तो पूरण ब्रह्म कन्हाई ॥ ४ ॥
ऐसो रस नहीं है माखनमें, मेवा मिसरी नहीं दाखनमें।
जो रस है ब्रज-रज चाखनमें, याने मुक्तिकी मुक्ति कराई ॥ ५ ॥
या रजको सुर नर मुनि तरसै, बड़भागी जन नित उठ परसे।
जाकी लगन लगी रहे हरिसे, यह तो घासीराम कथ गाई ॥ ६ ॥

(१७)

मारे मति मैय्या वचन भरवाय ले।
वचन भरवाय ले सौगन्ध कढवाय ले ॥ टेर ॥
गंगाकी खवाय ले चाहे जमुनाकी खवाय ले।
क्षीर सागरमें मैय्या ठाड़ो करवाय ले ॥ १ ॥
गैय्यनकी खवाय ले चाहे बछड़नकी खवाय ले।
नन्दबाबाके आगे ठाड़ो करवाय ले ॥ २ ॥
गोपियनकी खवाय ले चाहे ग्वालनकी खवाय ले।
दाऊ भैयाके माथे हाथ धरवाय ले ॥ ३ ॥

(१८)

झीनी-झीनी प्रेमकी डोरी मोपे, तोरी न छोड़ी जाय ॥ टेर ॥
साँकर होय तो तोर दिखाऊँ, वज्र होय तो पीस उड़ाऊँ।
पर्वत होय तो धार दिखाऊँ, धनुष होय तो तोड़ूँ छिनमें—
प्रीति न तोड़ी जाय ॥ १ ॥

सागर होय तो बाँध बनाऊँ, खंभ होय तो चीर दिखाऊँ।
तीन लोक लेऊँ नाप पाँव ते, प्रीति न नापी जाय ॥ २ ॥
बीस भुजा छिन माँहि उखारूँ, सहस्र बाहुको काट मैं डारूँ।
हृदय चीर हिरणकुश मारूँ, भौंहें मरोड़ उलट दूँ सृष्टि—
प्रीति न उलटी जाय ॥ ३ ॥

योग चाहे तो योग दे डारूँ, भोग चाहे तो भोग दे टारूँ।
मुक्ति चाहे तो मुक्ति दे तारूँ, परम भक्त मेरी प्रेम डोरसों—
बँध्यो न बाँध्यो जाय ॥ ४ ॥

सब अनाथ मैं नाथ कहायो, सबही हार मोहे शीश नवायो।
मो मायाको पार न पायो, सो मैं चाकर बनूँ भगतको—
प्रेमानंद बलि जाय ॥ ५ ॥

(१९)

मोहन मोहन जीक निस दिन मैं रटूँ जी।
कोई मोहन जीवन प्राण दरस दिवानी जी।
साँवरिया प्यारा आपकी जी ॥ १ ॥
साँवरी सूरत परजीक बारीगोपियाँ जी।
कोई मोहलई ब्रजनार सार विसारीजीक।
सुधबुध जगत की जी ॥ २ ॥
मुख पर मुरलीजीक बाजे मोहनजीक।
कोई गल वैजयन्ती माल मुकुट पीताम्बरजीक।
कटिमैं काछनीजी ॥ ३ ॥
बैनु बजावोजीक कान्हा सोहनी जी।
और दिखावो नाच गान सुनावो जी।
माखनजद मिलेजी ॥ ४ ॥
धेनु चरावतरेक बाबा नन्दजीकी।
कोई माँगत दधि को दान रीत चलावो रे।
कान्हा तूँ नई जी ॥ ५ ॥

विविध

(१)

बंगला अजब बन्या महाराज जा में नारायण बोले ॥ टेर ॥
पाँच तत्त्व की ईंट बनाई तीन गुनु का गारा।
छत्तीसुकी छात बनाई, चेतन है चेजारा ॥ १ ॥
इस बंगले के दस दरवाजा, बीच पवन का खम्भा,
आवत जावत कछु नहीं दीखै, ये भी एक अचम्भा ॥ २ ॥
इस बंगले में चोपड़ माँडी, खेले पाँच पचीसा,
कोई तो बाजी हार चल्यो है, कोई चल्या जुग जीता ॥ ३ ॥
इस बंगलेमें पातर नाचे, मनवा ताल बजावे,
निरत सुरत का बाँध घुँघरु, राग छतीसुँ गावे ॥ ४ ॥
कहे मछन्दर सुन जती गोरख, जिन ये बंगला गाया,
इस बँगले का गावनहारा, बहुरी जनम नहीं पाया ॥ ५ ॥

(२)

क्या तन माँजता रे, एक दिन माटी में मिल जाना ॥ टेर ॥
माटी ओढ़न माटी बिछावन, माटी का सिरहाना,
माटी का कलबूत बन्या है, जिसमें भँवर लुभाना ॥ १ ॥
मात-पिता का कहना मानो, हरि से ध्यान लगाना,
सत्य वचन और रही दीनता, सबको सुख पहुँचाना ॥ २ ॥
एक दिन दुल्हा बन्या बराती, बाजे ढोल निशाना,
एक दिन जाय जँगल में डेरा, कर सीधा पग जाना ॥ ३ ॥
हरि की भक्ति कबहुँ नहीं भूलो, जो चाहो कल्याना,
सब के स्वामी पालन करता, उनका हुकुम बजाना ॥ ४ ॥

(३)
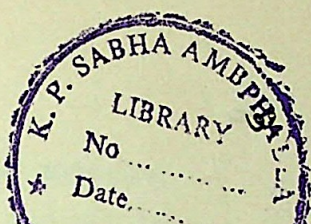
करो हरी का भजन प्यारे, उमरियाँ बीती जाती है ॥ टेर ॥
पुरब शुभ कर्म करी आया, मनुष्य तन पृथ्वी पर पाया,
फिरे विषयों में भरमाया, मौत नहीं याद आती है ॥ १ ॥
बालापन खेल में खोया, जोबनमें काम बस होया,
बुढ़ापा खाटपर सोया आस मनको सताती है ॥ २ ॥
कुटुम्ब परिवार सुत दारा, स्वप्न सम देख जग सारा,
माया का जाल विस्तारा नहीं ये संग जाती है ॥ ३ ॥
जो हरि के चरण चित लावे, सो भवसागर से तर जावे,
ब्रह्मानन्द मोक्ष पद पावे, वेद वानी सुनाती है ॥ ४ ॥

(४)

करमाँ की रेखा न्यारी, विधना टारी नाय टरे ॥ टेर ॥
लख घोड़ा लख पालखी, सिर पर छत्र फिरे,
हरिश्चन्द्र सतवादी राजा नीच घर नीर भरे ॥ १ ॥
राजा दसरथ के ताल में रे सरवन नीर भरे,
लग्यो बाण राजा के हाथ को, राम ही राम करे ॥ २ ॥
गुरु वशिष्ठ महा मुनी ग्यानी लिख लिख लगन धरे,
सियाजी को हरन मरन दसरथको, बन बन राम फिरे ॥ ३ ॥
पाँचु पाण्डु अधिक सनेही, उन घर भिखो पड़े,
कीचक आन सतावे बन में, हरी बाँकी सहाय करे ॥ ४ ॥
कित फन्दा कित पारदी रे कित वो मिरग चरे,
के धरती को तोड़ो आ गयो, फन्द में आय पड़े ॥ ५ ॥
तीन लोक भावीके बस में, भावी वसन करे,
सूरदास होनी सो होगी, मूरख सोच करे ॥ ६ ॥

(५)

मोर मुकुट की देख छाट मैं हो गई सजनी लटा पटा ॥ टेर ॥
मैं जल जमुना भरन जात री, मार्ग रोकत नाहीं हटा।
हाथ पकड़ मेरी बइयाँ मरोड़ी, विखर गया मेरा केश लटा ॥
मैं दधि बेचन जाऊँ वृन्दावन, मार्ग रोकत नाहीं हटा।
बइयाँ पकड़ मेरी मटकी फोड़ी, बिखर गया मेरा दही मठा ॥
सास ससुर मोहे बुरी बतावे, नणदल वोलत वचन खटा।
श्याम विहारी मेरी बात न बूझै, सखियन में मेरा मान घटा ॥
घुँघरवाले वाल श्याम के, मानो जैसे इन्द्र घटा।
सूरदास प्रभु के गुन गावे, राधा कृष्ण रटा रटा ॥

(६)

म्हाने घड़ो उठाता जावो रे कान्हा जमुना के तीर ॥ टेर ॥
जमुना तूँ वड़भागनी ये निरमल थारो नीर,
कान्ह वजावे बन्सरी खड्यो तुम्हारे तीर,
म्हाने मीठी बेन सुनावो रे कान्हा जमुना के तीर ॥ १ ॥
कुण राजाकी कँवर लाडली, कुण तुम्हारो नाम,
वृषभानु की कँवर लाडली, राधा म्हारो नाम,
म्हानै हँस हँस घड़ो उठावो रे कान्हा जमुना के तीर ॥ २ ॥
कठे तुम्हारो सासरो ये राधा कठ तुम्हारो पीर,
गढ़ गोकुल म्हारो सासरो जी वरसाने म्हारो पीर,
म्हान एकलड़ीने काँई पूछो रे कान्हा जमुना के तीर ॥ ३ ॥
कुण तुम्हारा सास ससुर है कुण पुरुष की नार।
नन्द यसोदा सास ससुर है पति है कृष्ण मुरार।
म्हानै बार-बार काँइ पूछो रे कान्हा जमुना के तीर ॥ ४ ॥

म्हारै घरे थे आवो जी साँवरा, म्हणी कराँ मनुवार,
चावल राधाँ उजला जी, हरिये मँगाँ की दाल,
थे तो रुच रुच भोग लगावो रे कान्हा जमुना के तीर ॥ ५ ॥
सूरत तुम्हारी साँवरी जी रही म्हारै मन भाय,
चन्द्र सखी की विनती जी सुनियो चित्त लगाय,
म्हारा वेड़ा पार लँघावो रे कान्हा जमुना के तीर ॥ ६ ॥

(७)

सन्तो कुण आवे रे कुण जाय, बोले छै जाँकी खबर करो ॥टेर॥
पानी को एक बन्यो बुद-बुदो, धरयो आदमी नाम,
कौल किया था भजन करनका, आय बसायो है गाँव ॥१॥
हस्ती छूटयो ठाण सैं रे लश्कर पड़ी पुकार,
दसूँ दरवाजा बन्द पडया है, निकल गयो असवार ॥२॥
जैसा पानी ओस का रे, वैसो ई संसार,
झिलमिल झिलमिल होय रई रे, जात न लागे बार ॥३॥
माखी बैठी सहत पर रे, पंख रही लपटाय,
कहत कबीर सुनो भाई साधो, लालच बुरी बलाय ॥४॥

(८)

सुरताँ दिन दस पीवरिये में आय, पियाने कैयाँ भूल गई ॥टेर॥
सदा सँगाती जा रहे रे, पीवरियो रो लोग,
पुरबली पुन्याई सेती, आन मिल्यो संजोग ॥१॥
पीवरियो मतलब को गरजी, स्वारथ को संसार,
ना कोई तेरा ना तूँ किसकी, झूठो करती है प्यार ॥२॥
गुरु गम गहणो पहर सुहागन, सज सोला सिंगार,
ऐसी बन ठन चलो ठाठ से, जद मिलसी भरतार ॥३॥

होय आधीन मिलो प्रीतम से, धरो चरण में सीस,
वाळू बालम समरथ तेरो, गुनाह करेगो वकसीस ॥४॥

(९)

चेतो कर ले राम सुमर ले, सुख पावेगी काया जी,
विना राम रघुनाथ भजन विन, वृथा जनम गमाया जी ॥टेर॥
नौ दस मास गरभ के अन्दर ऊँदै सिर लटकायाजी,
बाहर आन पड्यो धरनी पर, रोदन वहुत मचाया जी ॥१॥
वालपनो खेलनमें खोयो, माता लाड लडाया जी,
आई जवानी तिरिया प्यारी, वाँसै नेह लगाया जी ॥२॥
कहाँ से आया क्या करना था, माया देख लुभाया जी,
कर विचार कहाँ जायेगा, फिर ना रहेगी काया जी ॥३॥
उत्तम जूण अमोलक हीरा, कैसे भूल गमाया जी,
कह घनश्याम चेत कर वन्दे, सत् गुरु राह बताया जी ॥४॥

(१०)

नाम लिया हरि का जिसने,
तिन और का नाम लिया न लिया ॥टेर॥
जड़ चेतन सब जगजीवन को, घट में अपने सम जान सदा,
सब का प्रतिपालन नित्य किया, तिन बिप्रन दान दिया न दिया ॥
काम किये परमारथ के, तन से मन से धन से करके,
जग अन्दर कीरति छाय रही, दिन च्यार विसेस जिया न जिया ॥
जिस के घर में हरि की चर्चा नित होवत है दिन रात सदा,
सतसंग कथामृत पान किया, तिन तीरथ नीर पिया न पिया ॥
गुरु के उपदेस समागम से, जिनके अपने घट भीतर में,
ब्रह्मानन्द सरूप को जान लिया, तिन साधन योग किया न किया ॥

(११)

म्हारो लग्यो राम सैं हेत-हेत ।
करमां को संगाती राणा कोई भी नहिं ॥टेर॥
एक माटीका दोय माटला, राणाजी ।
ज्यांरो न्यारो-न्यारो भाग, करमांको संगाती ॥ १ ॥
एक तो शिवजीके जल चढ़े, राणाजी ।
दूजो श्मशानमें जाय, करमांको संगाती ॥ २ ॥
एक गऊके दोय वाछड़ा, राणाजी ।
ज्यांरो न्यारो-न्यारो भाग, करमांको संगाती ॥ ३ ॥
एक तो शिवजीके नांदियो, राणाजी ।
दूजो विणजारा रो वैल, करमांको संगाती ॥ ४ ॥
एक नारीके दोय वालका, राणाजी ।
ज्यांरो न्यारो-न्यारो भाग, करमांको संगाती ॥ ५ ॥
एक तो भोगे राजगद्दी, राणाजी ।
दूजो भीख मांगने जाय, करमांको संगाती ॥ ६ ॥
मीरां तो जन्मी मेड़ ते, राणाजी ।
ब्याही सीसोद्यां रै गाँव, करमांको संगाती ॥ ७ ॥
राणोजी भोगे राजगद्दी, राणाजी ।
मीरां साधांरी मण्डली मांय, करमांको संगाती ॥ ८ ॥

(१२)

जगमें होनहार बलवान, इसे कोई ना समझो झूठी ॥ टेर ॥
होनीको परतापके करी म्हैलनमें रूठी
राम गये बनवास देह नृप दशरथकी छूटी ॥ १ ॥
होनीको परताप एक दिन रावणपर बीती
दियो विभीषण राज लंक गढ़ सुवरणकी टूटी ॥ २ ॥

होनीको परताप एक दिन अर्जुनपर बीती
वै अर्जुन बै बाण गोपियाँ भीलणनै लूटी ॥ ३ ॥
होनीको परताप एक दिन नल ऊपर बीती
घासीराम चेत मन मूरख चौरासी छूटी ॥ ४ ॥

(१३)

नाथ ! थारे सरणे आयोजी ।
जचे जिसतरां, खेल खिलाओ, थे मन चायो जी ॥ १ ॥
बोझो सभी उतरयो मनको, दुख बिनसायो जी ।
चिन्ता मिटी, वड़े चरणांको सहारो पायो जी ॥ २ ॥
सोच फिकर अब सारो थारे ऊपर आयो जी ।
मैं तो अब निश्चिन्त हुयो अन्तर हरखायो जी ॥ ३ ॥
जस अपजस सब थारो, मैं तो दास कुहायो जी ।
मन भँवरो थारे चरण कमलमें जा लिपटायो जी ॥ ४ ॥

(१४)

मैं तो हूँ भगतनको दास, भगत मेरे मुकुट मणि ॥ टेर ॥
मोकूँ भजे भजूँ मैं उनको हूँ दासनको दास ।
सेवा करे करूँ मैं सेवा हो सच्चा विश्वास—
यही तो मेरे मनमें ठणी ॥ १ ॥
जूठा खाऊँ गले लगाऊँ नहीं जातिको ध्यान ।
आचार-विचार कछु नहीं देखूँ, देखूँ मैं प्रेम-सम्मान—
भगत-हित नारि बणी ॥ २ ॥
पग चाँपू और सेज बिछाऊँ नौकर बनूँ हजाम ।
हाँकूँ बैल बनूँ गडवारो बिन तनख्वा रथवान—
अलखकी लखता बणी ॥ ३ ॥

अपनो परण विसार भक्तको पूरो परण निभाऊँ।
साधु जाचक बनूँ कहे सो वेचे तो विक जाऊँ—
और क्या कहूँ घणी ॥ ४ ॥

गरुड़ छोड़ वैकुण्ठ त्यागके, नंगे पाँवों धाऊँ।
जहाँ-जहाँ भीड़ पड़े भक्तोंमें, तहाँ-तहाँ दौड़ा जाऊँ—
खवर नहीं करूँ अपणी ॥ ५ ॥

जो कोई भक्ति करे कपटसे उसको भी अपनाऊँ।
साम, दाम और दण्ड-भेदसे सीधे रस्ते लाऊँ—
नकलसे असल बणी ॥ ६ ॥

जो कुछ बनी बनेगी उसमें कर्ता मुझे ठैरावे।
नरसी हरि गुण चरणन चेरो, औरन सीस नवावे—
पतिवरता एक धणी ॥ ७ ॥

(१५)

म्हाने रामजी सदा वर दीज्यो हे माय।
अमराँ पुर म्हारो सासरो ॥

म्हाने इण जग में मति राखो हे माय !
किसो भरोसो इण सासरो ॥ टेर ॥

मैं जो अयानी धीवड़ नानी,
म्हारी माता बड़ी विधाता हे माय ॥ १ ॥

बावल ज्ञानी सब सिधि जानी,
म्हाने चार पदारथ दाता हे माय ॥ २ ॥

चँवरी मांडी कदे नहीं रांडी,
म्हारो सतगुरु लगन लिखायो हे माय ॥ ३ ॥

सदा सुहागण कदे न दुहागण,
अजर अमर पद पायो हे माय ॥ ४ ॥

सदा सपूती कदे न अपूती,
म्हारे शब्द पुत्र भल जायो हे माय ॥ ५ ॥
रामदारा चरण निवासा,
ये तो दयाल बाल जस गायो हे माय ॥ ६ ॥

(१६)

मैं तो गिरधर के रंग राती ॥ टेर ॥
पचरंग चोला पहिर सखीरी, झुरमुट खेलन जाती।
झुरमुट में मोहि मिलियो साँवरो, खोल मिली तन गाती ॥ १ ॥
और सखी मद पी-पी माती, मैं बिन पिये रहुँ माती।
मैं रस पीऊँ प्रेम भट्टी को, छकी रहूँ दिन राती ॥ २ ॥
कोई के पिया परदेस बसत है, लिख-लिख भेजत पाती।
मेरे पिया मेरे घट में बिराजे, बात करूँ दिन राती ॥ ३ ॥
सुरति निरति का दिवला सँजोऊँ, मनसा की करलूँ बाती।
अगम घाणी से तेल कढ़ाऊँ, बाल रही दिन राती ॥ ४ ॥
पीहर रहुँ ना सासरे में, प्रभु से सैन लगाती।
मीरा कह प्रभु गिरधर नागर, चरण रहुँ दिन राती ॥ ५ ॥

(१७)

मैं तो हूँ संतन को दास, जिन्होंने मन मार लिया ॥ टेर ॥
मन मारया तन बस किया रे, हुआ भरम सब दूर।
बाहिर तो कछु दीखत नाहीं, भीतर चमके नूर ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ मारके, मिटी जगत की आस।
बलिहारी उन संत की रे, प्रकट किया प्रकास ॥ २ ॥
आपो त्याग जगत में बैठे, नहीं किसी से काम।
उनमें तो कछु अन्तर नाँहीं, संत कहौ चाहे राम ॥ ३ ॥
नरसीजी के सतगुरु स्वामी, दिया अमीरस पाय।
एक बूँद सागर में मिल गई, क्या तो करेगा जमराज ॥ ४ ॥

(१८)

मत बाँधो गठरिया अपजस की ॥ टेर ॥
यो संसार बादल की छाया, करो कमाई भाई हरि रस की ॥१॥
ज़ोर जवानी ढलक जायगी, बाल अवस्था तेरी दिन दस की ॥२॥
धर्मदूत जब फाँसी डारे, खबर लेवे थारे नस-नस की ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जब तेरे बात नहीं बस की ॥४॥

(१९)

तन धर सुखिया कोई न देख्या जो देख्या सो दुखिया वे।
उदै अस्तकी बात कहत हूँ सबका किया विवेका वे ॥ टेर ॥
सुक आचारज दुख के कारण, गर्भ में माया त्यागी वे।
घाटाँ-घाटाँ सब जग दुखिया, क्या गेही वैरागी रे ॥ १ ॥
साँच कहूँ तो को न माने, झूठो कही न जाई वे।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया, जिन यह सृष्टि रचाई वे ॥ २ ॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना वे।
आसा तृष्णा सब घट व्यापे, को महल नहीं सूना वे ॥ ३ ॥
राजा दुखिया प्रजा दुखिया, रंक दुखी धन रीता वे।
कहत कबीर सभी जग दुखिया, साधु सुखी मन जीता वे ॥ ४ ॥

(२०)

कैसे खेल रच्यो मेरे दाता, जित देखूँ उत तू ही तूँ।
कैसी भूल जगतमें डारी, साबित करणी कर रह्यो तूँ ॥ टेर ॥
नर नारी में एक ही कहिए, दोय जगत में दर्शे तूँ।
बालक होय रोवण ने लाग्यो, माताँ बन पुचकारो तूँ ॥ १ ॥
कीड़ी में छोटो बन बैठ्यो, हाथी में ही मोटो तूँ।
होय मगन मस्ती में डोले, महावत बन कर बैठ्यो तूँ ॥ २ ॥

राजघराँ राजा वन बैठ्यो, भिखयाराँ में मँगतो तूँ।
होय झगड़ाळू झगड़वा लाग्यो, फौजदार फौजाँ में तूँ ॥ ३ ॥
देवल में देवता वन बैठ्यो, पूजा में पूजारी तूँ।
चोरी करे जव बाजे चोरटो, खोज करन में खोजी तूँ ॥ ४ ॥
राम ही करता राम ही भरता, सारो खेल रचायो तूँ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, उलट खोज कर पायो तूँ ॥ ५ ॥

(२१)

जानकीनाथ सहाय करे, तव कौन बिगाड़ करे नर तेरो ॥टेर॥
सूरज, मंगल, सोम, भृगुसुत, बुध और गुरु व वरदायक तेरो ।
राहु केतु की नाँहि गम्यता, तुला शनीचर होय है चेरो ॥ १ ॥
दुष्ट दुशासन निबल द्रौपदि, चीर उतारण मंत्र विचारो ।
जाकी सहाय करी यदुनन्दन, बढ़ गयो चीरको भाग घनेरो ॥ २ ॥
गर्भकाल परीक्षत राख्यो, अश्वत्थामा को अस्त्र निवार्‌यो ।
भारत में भरुही के अंडा, तापर गज को घंटो गेर्‌यो ॥ ३ ॥
जिनकी सहाय करे करुणानिधि, उनको जगमें भाग्य घनेरो ।
रघुवंशी संतन सुखदायी, तुलसीदास चरणों को चेरो ॥ ४ ॥

(२२)

मनवा नाँहि बिचारे, थारी म्हारी करता
ऊमर बीत सारी रे ॥ टेर ॥
नव दस मास गर्भ में राख्यो, माता थाँरी रे।
नाथ बाहिर काढ भगती कर स्यूँ थाँरी रे ॥ १ ॥
बालपने में लाड लडायो, माता थाँरी रे।
भर जोवन में लगे पियारी, नारी प्यारी रे ॥ २ ॥
माया माया करतो फिर्‌यो जड़ से भारी रे।
कौड़ी कौड़ी कारण मूरख ले तो राड़ उधारी रे ॥ ३ ॥

विरध भयो जब यूँ उठ बोली, घर की नारी रे।
अब बुढलो मर जाय तो छूटे, गैल हमारी रे॥ ४॥
रुक गया साँस दशों दरवाजा, मच रही ख्यारी रे।
कालूराम गुराँ के शरणे, कह दी सारी रे॥ ५॥

(२३)

भज मन चरण कमल अविनासी॥ टेर॥
जेताई दीसे धरण गगन बिच, तेताई सब उठ जासी।
कहा भयो तीरथ-व्रत कीन्हें, कहा लिये करवत-कासी॥ १॥
इण देही का गरव न करणा, माटी में मिल जासी।
यों संसार चहर की बाजी, साँझ पड्याँ उठ जासी॥ २॥
कहा भयो है भगवा पहर्‌याँ, घर तज भये संन्यासी।
जोगी होय जुगत नहिं जाणी, उलट जनम फिर आसी॥ ३॥
अरज करूँ अबला कर जोड़े, श्याम तुम्हारी दासी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फाँसी॥ ४॥

(२४)

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार, उदास मन काहे को करे।
नैया तू कर दे प्रभु के हवाले, लहर-लहर हरि आप सँभाले॥
हरि आप ही उतारे तेरा भार, निराश मन॥ १॥
काबू में मँझधार उसी के, हाथों में पतवार उसी के।
बाजी जीत लेवो चाहे तुम हार, उदास मन॥ २॥
गर निर्दोष तुझे क्या डर है, पग पग पर साथी ईश्वर है।
ज़रा भावना से कीजिये पुकार, उदास मन॥ ३॥
सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा।
डोरी सौंप दे उसी के सब हाथ, उदास मन॥ ४॥

(२५)

मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वह धन किसी का है दिया॥
देने वाले ने दिया, वह भी दिया किस शान से।
"मेरा है" यह लेने वाला कह उठा अभिमान से॥
"मैं-मेरा" यह कहने वाला मन किसीका है दिया।
जो मिला है वह हमेशा पास रह सकता नहीं॥
कब बिछुड़ जाये, यह कोई राज कह सकता नहीं।
जिन्दगानी का खिला मधुवन किसी का है दिया॥
मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जग की सेवा, खोज अपनी, प्रीति उनसे कीजिये॥
जिन्दगी का राज है, यह जानकर जी लीजिये।
साधना की राह पर साधन किसी का है दिया॥
मैं नहीं…………॥

(२६)

पछतायेगा, पछतायेगा फिर गया समय नहीं आयेगा॥ टेर॥
रतन अमोलक मिलिया भारी काँच समझ कर दीना डारी।
खोजत नाहीं मूरख अनाड़ी, फेर कभी नहीं पायेगा॥ १॥
नदी किनारे बाग लगाया, मूरख सोवे ठंडी छाया।
काल चिडैया सब फल खाया, खाली खेत रह जायेगा॥ २॥
बालू का तू महल बनावे, कर कर जतन सामान लजावे।
पल में वर्षा आय गिरावे, हाथ मसल रह जायेगा॥ ३॥
लगा बजार नगर के माँही, सब ही वस्तु मिले सुखदाई।
ब्रह्मानन्द खरीदो भाई बेग दुकान उठायेगा॥ ४॥

(२७)

म्हारा नटराजा, थाँरे नचायो नाचूँ।
प्यारा गिरधरलाल, थाँरे नचायो नाचूँ ॥ टेर ॥
थाँरे घर में रहूँ निरन्तर, थाँरी द्वार चलावूँ।
थाँरे धन से थाँरे जन की सेवा टहल बजावूँ ॥ १ ॥
ज्याँ रँगरा कपड़ा पहिरावे, वै सोइ स्याँग बणावूँ।
जैसा बोल बुलावे मुखसूँ वैसीहि बात सुणावूँ ॥ २ ॥
रूखा सूखा जो कछु देवे, थाँरे भोग लगावूँ।
खीर परुस या छाछ राबड़ी, सबड़ प्रेम से पावूँ ॥ ३ ॥
घरका प्राणी कयो न माने, मन मन खुशी मनावूँ।
थाँरे इण मंगल विधान में, मैं क्यूँ टाँग अड़ावूँ ॥ ४ ॥
जो तूँ ठोकर मार गिरावे, लकड़ी ज्यूँ गिर ज्यावूँ।
जो तूँ माथे उपर बिठावे, तो भी न सरमावूँ ॥ ५ ॥
कोस हजार पकड़ ले ज्यावे, दौड़्यो दौड़्यो जावूँ।
जो तूँ आसण मार बिठावे, गोडो-नाँय हिलावूँ ॥ ६ ॥
जो तूँ तन के रोग लगावे, ओढ़ सिरस सो ज्यावूँ।
जो तूँ काल रूप बण आवे, लपक गोदमें आवूँ ॥ ७ ॥
उलटो सुलटो जो कछु कर ले, मंगल रूप लखावूँ।
थाँरी मन चाही में प्यारा, अपनी चाह मिलावूँ ॥ ८ ॥

(२८)

जय भगवद् गीते, जय भगवद् गीते।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि सुन्दर सुपुनीते ॥
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि कामासक्तिहरा।
तत्वज्ञान-विकाशिनि विद्या ब्रह्म परा ॥ जय० ॥

निश्चल-भक्ति-विधायिनि निर्मल मलहारी।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि सब विधि सुखकारी ॥ जय० ॥
राग-द्वेष-विदारिणि कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि तारिणि परमानन्दप्रदा ॥ जय० ॥
आसुर-भाव-विनाशिनि नाशिनि तम रजनी।
दैवी सद्गुणदायिनि हरि-रसिका सजनी ॥ जय० ॥
समता, त्याग सिखावनि, हरि-मुख की वानी।
सकल शास्त्र की स्वामिनि श्रुतियों की रानी ॥ जय० ॥
दया-सुधा बरसावनि, मातु ! कृपा कीजै।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै ॥ जय० ॥

(२९)

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे !!
भक्तजनोंके संकट, क्षणमें दूर करे ॥ ॐ जय० ॥
जो ध्यावै फल पावै, दुःख विनसै मनका ॥ प्रभु० ॥
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका ॥ ॐ जय० ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ? ॥ प्रभु० ॥
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ जय० ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु० ॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ जय० ॥
तुम करुणाके सागर, तुम पालनकर्ता ॥ प्रभु० ॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ! ॥ ॐ जय० ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ॥ प्रभु० ॥
किस विधि मिलूँ दयामय ! तुमको मैं कुमती ॥ ॐ जय० ॥
दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥ प्रभु० ॥
अपने हाथ उठावो, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ जय० ॥

विषय-विकार मिटावो, पाप हरो देवा ॥ प्रभु० ॥
श्रद्धा-भक्ति बढ़ावो, सन्तनकी सेवा ॥ ॐ जय० ॥
तन-मन-धन सब है तेरा, स्वामी सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु० ॥
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ जय० ॥

(३०)

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला, यशुमतिके हितकारी ।
हर्षित महतारी रूप निहारी, मोहन-मदन मुरारी ॥ १ ॥
कंसासुर जाना अति भय माना, पुतना वेगि पठाई ।
सो मन मुसुकाई हर्षित धाई, गई जहाँ जदुराई ॥ २ ॥
तेहि जाइ उठाई हृदय लगाई, पयोधर मुखमें दीन्हें ।
तब कृष्ण कन्हाई मन मुसुकाई, प्राण तासु हरि लीन्हें ॥ ३ ॥
जब इन्द्र रिसाये मेघ बुलाये, वशीकरण ब्रज सारी ।
गौवन हितकारी मुनि मन हारी, नखपर गिरिवर धारी ॥ ४ ॥
कंसासुर मारे अति हंकारे, वत्सासुर संहारे ।
बकासुर आयो बहुत डरायो, ताकर वदन विडारे ॥ ५ ॥
अति दीन जानि प्रभु चक्रपाणी, ताहि दीन निज लोका ।
ब्रह्मासुर राई अति सुख पाई, मगन हुये गये शोका ॥ ६ ॥
यह छन्द अनूपा है रस रूपा, जो नर याको गावै ।
तेहि सम नहिं कोई त्रिभुवन माँही, मन-वांछित फल पावै ॥ ७ ॥
दोहा—नन्द यशोदा तप कियो, मोहन सो मन लाय ।
तासों हरि तिन्ह सुख दियो, बाल-भाव दिखलाय ॥

(३१)

मो सम कौन कुटिल खल कामी ।
जिन तनु दियो ताहि विसरायो, ऐसो नमकहरामी ॥ १ ॥
भरि-भरि उदर विषयको धायो, जैसे सूकर-ग्रामी ।
हरिजन छाँड़ि हरि-विमुखनकी, निसि-दिन करत गुलामी ॥ २ ॥

पापी कौन बढ़ो जग मोतें, सब पतितनमें नामी।
"सूर" पतितको ठौर कहाँ है, तुम बिनु श्रीपति स्वामी ॥ ३ ॥

(३२)

सुने री मैंने निरबल के बल राम।
पिछली साख भरूँ संतनकी, आड़े सँवारे काम ॥ १ ॥
जब लगि गज बल अपनो बरत्यो, नेक सर्‌यो नहिं काम।
निरबल ह्वै बल राम पुकार्‌यो, आये आधे नाम ॥ २ ॥
द्रुपद-सुता निरबल भइ ता दिन, तजि आये निज धाम।
दुस्सासनकी भुजा थकित भई, बसनरूप भये स्याम ॥ ३ ॥
अप-बल, तप-बल और बाहु-बल, चौथो है बल दाम।
'सूर' किसोर कृपातें सब बल, हारेको हरिनाम ॥ ४ ॥

(३३)

उड़ जायगा रे हंस अकेला, छिन दोयका दर्शन-मेला ॥ टेर ॥
राजा भी जायगा, जोगी भी जायगा, गुरु भी जायगा चेला ॥ १ ॥
माता-पिता भाई-बन्धु भी जायेंगे, और रुपयोंका थैला ॥ २ ॥
तन भी जायगा, मन भी जायगा, तू क्यों भया है गैला ॥ ३ ॥
तू भी जायगा तेरा भी जायगा, यह सब मायाका खेला ॥ ४ ॥
कोड़ी रे कोड़ी माया जोड़ी, संग चलेगा न अधेला ॥ ५ ॥
साथी रे साथी तेरे पार उतर गये, तू क्यों रहा अकेला ॥ ६ ॥
राम-नाम निष्काम रटो, नर, बीती जात है बेला ॥ ७ ॥

(३४)

चलो मन गंगा जमुना तीर।
गंगा जमुना निरमल पानी सीतल होत शरीर।
बंशी बजावत गावत कान्हो, संग लिये बलबीर ॥

मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुण्डल झलकत हीर।
'मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर, चरण-कँवल पै सीर॥

(३५)

मन ! तू क्यों पछतावे रे, दिल तू क्यों घबरावेरे।
सिरपर श्रीगोपाल बेडा पार लगावेरे॥ टेर ॥ १॥
निज करनी ने याद करूँ जब जियो घबरावेरे।
प्रभुकी महिमा सुण-सुण दिलमें धीरज आवेरे॥ मन०॥ २॥
शरणागतकी लाज तो सब ही ने आवेरे।
तिरलोकी को नाथ लाज हरि नाहिं गमावेरे॥ मन०॥ ३॥
जो कोई अनन्य-चित्त से हरि को ध्यान लगावेरे।
वाके घर को योगक्षेम हरि आप निभावेरे॥ मन०॥ ४॥
जो मेरा अपराध गिनो तो, अन्त न आवेरे।
ऐसो दीनदयालु हरि चित एक न लावेरे॥ मन०॥ ५॥
पतित-उधारन विरद प्रभुको वेद बतावेरे।
मोर गरीब के काज विड़द हरि नाथ लजावेरे॥ मन०॥ ६॥
महिमा अपरम्पार तो सुर-नर-मुनि गावेरे।
ऐसो नन्दकिशोर, भक्तको ओड़ निभावेरे॥ मन०॥ ७॥
वो है रमा-निवास भक्तकी त्रास मिटावेरे।
तू मत होय उदास कृष्णका दास कहावेरे॥ मन०॥ ८॥

(३६)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है॥ टेर॥
टुक नींद से अँखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभुसे ध्यान लगा।
यह प्रीति करनकी रीति नहीं, प्रभु जागत हैं तू सोवत है॥ १॥

जो कल करना है आज कर ले, जो आज करना वो अब कर ले।
जब चिड़ियोंने चुग खेत लिया, फिर पछिताये क्या होवत है ॥२॥
नादान भुगत अपनी करनी, ऐ पापी पापमें चैन कहाँ।
जब पापकी गठरी शीश धरी, अब शीश पकड़ क्यों रोवत है ॥३॥

(३७)

करो कोई लाख करैयो एक और है।
करैयो एक और है, भक्तांको भीड़ी और है ॥ १ ॥
कहै हिरनाकुश मारूँगा प्रह्लादने।
मारूँगा प्रह्लादने मेरी खड्ग कठोर है ॥ २ ॥
कहै दुःशासन सुन ये द्रौपदी।
करूँ तन नगन भुजामें मेरे जोर है ॥ ३ ॥
कहै कंस वसुदेवको निरवंश करूँ।
करूँगा निरवंश शिशुपालकै सिरमोर है ॥ ४ ॥
रणोजी बोल्यो सुन ये मेड़तड़ी।
देऊँ तन जहर-बिष योही मेरो जोर है ॥ ५ ॥
मीराँके प्रभु गिरिधर-नागर।
करताको करैयो एक नन्दको किशोर है ॥ ६ ॥

(३८)

कैसे बैठ्यो रे आलसमें, तो से राम कह्यो ना जाय।
राम कह्यो ना जाय, तो पै कृष्ण कह्यो ना जाय ॥ १ ॥
भोर भयो मल-मल मुख धोयो, दिन चढ़ते ही उदर टटोयो;
बातन-बातन सब दिन खोयो, साँझ भई पलगाँ पर सोयो।
सोवत-सोवत उमर बीत गई, काल शीश मंडराय ॥ कैसे० ॥२॥
लख चौरासीमें भरमायो, बड़े भाग नर देह तू पायो;
अबकी चूक न जाना भाई, लुटने पावै नहीं कमाई।
"राधेश्याम" समय फिर ऐसो, बार-बार नहिं आय ॥ कैसे० ॥३॥

(३९)

डरते रहो यह जिन्दगी, बेकार ना हो जाय।
सपनेमें भी किसी जीवका, अपकार ना हो जाय ॥ १ ॥
पाया है तन अनमोल, सदाचारके लिये।
विषयोंमें फँसके कहीं, अनाचार ना हो जाय ॥ २ ॥
सेवा करो सब देशकी, शुभ-कर्म हरि-भजन।
इतना भी करके पीछे, अहंकार ना हो जाय ॥ ३ ॥
मंजिल असल मुकामकी, तय करनी है तुम्हें।
इस ठग नगरीमें आयके, गिरफ्तार ना हो जाय ॥ ४ ॥
'माधव' लगी है बाजी, माया मोह-जालसे।
धोखेमें फँसके अबके, कहीं हार ना हो जाय ॥ ५ ॥

(४०)

जनम लियो वाने मरणो पड़सी, मौत नगारो सिर कूटे रे।
लाख उपाय करो मन कितना, बिना भजन नहीं छूटे रे ॥ १ ॥
जमराजा रो आयो झूलरो, प्राण पलकमें छूटे रे।
हिचकी हाल हचीड़ो लागे, नाड़ियाँ तड़ातड़ टूटे रे ॥ २ ॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीलो, रामजी रूठ्याँ सब रूठे रे।
एक पलकमें प्रलय हो जासी, घाल रथोमें तन कूटे रे ॥ ३ ॥
जीवड़ाने लेय जमड़ा जब चाले, क्रोध कर-कर कूटे रे।
गुरजाँरी[1] घमसाण मचावे, तुरत तालवो फूटे रे ॥ ४ ॥

१. मुद्गर।

जीवड़ाने जमड़ा नरकमें डाले, कीड़ा कागला चूँटे रे।
भुगतेलो जीव भजन बिन भाई ! जमड़ा जुगो-जुग कूटे रे ॥ ५ ॥
चतुरायाँमें भूल पड़ेली, थारा करमड़ा फूटे रे।
करमाँरो हीण कीचड़में कलियो[1], विना भजन नहीं छूटे रे ॥ ६ ॥
राम सुमर ले सुकरत कर ले, मोह-बंधन सब छूटे रे।
कहत कवीर सुख चाहे रे जीवरो, राम-नाम धन लूटे रे ॥ ७ ॥

(४१)

जीव ! तू मत करना फिकरी, जीव ! तू मत करना फिकरी।
भाग लिखी सो हुई रहेगी, भली-बुरी सगरी ॥ टेर ॥ १ ॥
सहस पुत्र राजा सगरके, तप कीन्हो अकरी।
थारी गतिने तूही जाने, आग मिली ना लकड़ी ॥ २ ॥
तप करके हिरनाकुश राजा, वर पायो जवरी।
लोह लकड़से मर्‍यो नहीं, वो मर्‍यो मौत नखरी ॥ ३ ॥
तीन लोककी माता सीता, रावण जाय हरी।
जब लक्ष्मणने करी चढ़ाई, लंका गई बिखरी ॥ ४ ॥
आठ पहर साहिबको रटना, ना करना जिकरी।
कहत कवीर सुनो भाई साधो, रहना वे-फिकरी ॥ ५ ॥

(४२)

सूरत दीनानाथसे लगी, तूँ समझ सुहागण सुरता-नार ॥ टेर ॥
लगनी-लहँगो पहर सुहागण, वीती जाय वहार।
धन-जोवन है पावणा री, मिलै न दूजी वार ॥ १ ॥

---

१. फँसियो।

राम-नामको चुड़लो पहिरो, प्रेमको सुरमो सार।
नक-बेसर हरि-नामकी री, उतर चलोनी परले पार॥ २॥
ऐसे बरको क्या वरूँ, जो जन्मैं और मर जाय।
वर वरिये एक साँवरो री, चुड़लो अमर होय जाय॥ ३॥
मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो री, हरि ठग ले गयो मोय।
लख चौरासी मोरचा री, छिनमें गेरथा छै विगोय॥ ४॥
सुरत चली जहाँ मैं चली री, कृष्ण नाम झंकार।
अविनाशीकी पोल पर जी, मीरा करै छै पुकार॥ ५॥

(४३)

मनवा काँई कमायो रे?
लियो न हरिको नाम, विरथा जनम गवाँयो रे॥ टेर॥
गर्भवासमें कष्ट भयो, मालिकने ध्यायो रे।
बाहर काढ़ो नाथ! मैं तो, अति दुःख पायो रे॥ १॥
कई जन्मको पाप पुण्य, तने वहाँ दरसायो रे।
अब भूलूँगो नाहिं, ऐसो वचन सुनायो रे॥ २॥
सब संकट तेरा मेटथा मालिक, बाहर लायो रे।
काम सरथो दुःख बीसरथो, हरि याद न आयो रे॥ ३॥
पाछे तूँ रोवणने लाग्यो, जुग कहै जायो रे।
साँच कहे संसार कोई, रहण न पायो रे॥ ४॥
बालपणेमें बालो-भोलो, साराँ खिलायो रे।
तरुणि तिरिया ब्याही थाने, काम सतायो रे॥ ५॥

कुटुम्ब कबीलो धन देख्याँ तो, अति हरषायो रे ।
मरणो सूझ्यो नाहिं तृष्णा, लोभ बँधायो रे ॥ ६ ॥
वृद्ध भयो तेरा हाणं[1] थक्या, साराँ छिटकायो रे ।
अकल विनाका डैणं[2], सारो मान घटायो रे ॥ ७ ॥
सब खाँसा तेरी बीती, आड़ो कोई न आयो रे ।
हुकुम दियो जमराज थाने, पकड़ मँगायो रे ॥ ८ ॥
पाप-पुण्यको निरणो सारो, बाँच सुणायो रे ।
पड़्यो नरकमें भोगो कियो, अपणो पायो रे ॥ ९ ॥
सतगुरु 'कालूराम' ज्ञान, यह साँच बतायो रे ।
पार लगावो नाथ, धन्नो शरणै आयो रे ॥ १० ॥

(४४)

दो दिनका जगमें मेला, सब चला-चलीका खेला ॥
कोइ चला गया कोई जावै, कोइ गठरी बाँध सिधावै ।
कोइ खड़ा तैयार अकेला, सब चला-चलीका खेला ॥ १ ॥
कर पाप-कपट, छल-माया, धन लाख-करोड़ कमाया ।
सँग चले न एक अधेला, सब चला-चलीका खेला ॥ २ ॥
सुत-नारि, मातु-पितु, भाई, अन्त सहायक नाहीं ।
क्यों भरे पापका ठेला, सब चला-चलीका खेला ॥ ३ ॥
यह नश्वर सब संसारा, कर भजन ईशका प्यारा ।
'ब्रह्मानंद' कहे सुन चेला, सब चला-चलीका खेला ॥ ४ ॥

---

१. हाड़-हिम्मत । २. बूढ़ा मानव ।

(४५)

सूरख छाड़ वृथा अभिमान।
औसर बीत चल्यो है तेरो, दो दिनको मेहमान ॥ १ ॥
भूप अनेक भये पृथ्वी पर, रूप तेज बलवान।
कौन बच्यो या काल-व्याल तें, मिट गये नाम निशान ॥ २ ॥
धवल-धाम धन गज रथ सेना, नारी चन्द्र समान।
अन्त समय सब ही को तज कर, जाय बसे शमशान ॥ ३ ॥
तज सत-संग भ्रमत विषयनमें, जा विधि मरकट श्वान ।।
छिन भर बैठि न सुमिरन कीन्यो, जासों हो कल्यान ॥ ४ ॥
रे मन मूढ़ अनत जनि भटकै, मेरो कह्यो अब मान।
'नारायण' ब्रजराज कुँवरसों, वेगहिं कर पहिचान ॥ ५ ॥

(४६)

करी गोपालकी सब होइ।
जो अपनौं पुरुषारथ मानत, अति झूठौ है सोइ ॥ १ ॥
साधन मंत्र-यंत्र उद्यम बल, यह सब डारहु धोइ।
जो कछु लिखि राखी नंदनंदन, मेटि सकै नहिं कोइ ॥ २ ॥
दुःख सुख लाभ अलाभ समुझि तुम, कतहु मरत हौ रोइ।
'सूरदास' स्वामी करुनामय, श्याम-चरन मन पोइ ॥ ३ ॥

(४७)

आरामके साथी क्या-क्या थे, जब वक्त पड़ा तब कोई नहीं।
सब दोस्त हैं अपने मतलबके, दुनियाँमें किसीका कोई नहीं ॥ १ ॥
सुल्तान जहाँ माशूक जो थे, सूने हैं पड़े मरघट उनके।
जहाँ चाहनेवाले लाखों थे, वहाँ रोनेवाला कोई नहीं ॥ २ ॥

जो खूब अकड़के चलते थे, वे आज फिरत मारे-मारे।
जहाँ फुरसत बात करनकी न थी, बतलानेवाला कोई नहीं ॥ ३ ॥
ये भाई बन्धु लोग सभी, जो दीखत है अपने-अपने।
इस जगके भीतर धर्म सिवा, आखिर में तुम्हारा कोई नहीं ॥ ४ ॥
अठारह पुराण बनाये थे, पर अन्त वचन ये दो ही कहे।
पर-पीड़न सम कछु पाप नहीं, नेकी सम पुण्य है कोई नहीं ॥ ५ ॥

(४८)

सब दिन होत न एक समान, होत न एक समान ॥
एक दिन राजा हरिश्चन्द्र घर, सम्पति मेरु समान।
कबहुँक दास स्वपच गृह बस कर, अम्बर गहत मसान ॥ १ ॥
कबहुँक राम जानकीके संग, विचरत पुष्प विमान।
कबहुँक रुदन करत हम देखे, माधो सघन-उद्यान ॥ २ ॥
राजा युधिष्ठिर धरम-सिंहासन, अनुचर श्रीभगवान।
कबहुँक द्रौपदी रुदन करत है, चीर दुशासन टान ॥ ३ ॥
कबहुँक दूलहा बनत बराती, चहुँ दिशि मंगल गान।
कबहुँक मृत्यु होत पल छिनमें, कर लम्बे पद यान ॥ ४ ॥
कबहुँक जननी जनत अंक विधि, लिखत लाभ अरु हानि।
'सूरदास' यों सब जग झूठो, विधना अंक प्रमान ॥ ५ ॥

(४९)

प्यारे ! जीवनके दिन चार।
भूल न जाना जग ममताका, देख कपट-व्यवहार ॥प्यारे०॥१॥
किसका तू है, है कोन तुम्हारा, स्वारथ-रत संसार ॥प्यारे०॥२॥

अति दुर्लभ मानुष-तन पाकर, खो मत इसे गँवार ॥प्यारे०॥३॥
प्यारे प्रभुसे प्रीति करे यदि, तो उतरै भव पार ॥प्यारे०॥४॥

(५०)

मोहन प्रेम बिना नहीं मिलता, चाहे कर लो लाख उपाय ॥ टेर ॥
मिले न यमुना सरस्वतीमें, मिले न गंग नहाय।
प्रेम-सरोवरमें जब डूबे, प्रभुकी झलक लखाय ॥मोहन०॥१॥
मिले न पर्वतमें निर्जनमें, मिले न बन भरमाय।
प्रेम बाग घूमे तो प्रभुको, घटमें ले पधराय ॥ मोहन० ॥२॥
मिले न पंडितको ज्ञानीको, मिले न ध्यान लगाय।
ढाई अक्षर प्रेम पढ़े तो, नटवर नयन समाय ॥ मोहन० ॥३॥
मिले न मन्दिरमें, सूरतमें, मिले न अलख जगाय।
प्रेम-बिन्दु जब दृगसे टपके तुरत प्रकट हो जाय ॥मोहन०॥४॥

(५१)

राणों पूछे मीराबाईने बात, काँई थारे लागे जी गोपाल ? ॥टेर॥
सिंहको पिंजड़ो राणाने भेज्यो, दयो मीराके हाथ।
खोल किंवाणी देखण लागी, दरसन-शालिग्राम ॥काँई०॥१॥
सर्प-पिटारो राणाने भेज्यो, दयो मीराने जाय।
खोल पिटारो देखण लागी, बण गयो नोसर-हार ॥काँई०॥२॥
विषका प्याला राणाने भेज्या, दयो मीरा के हाथ।
कर चरणामृत पी गई जी, थे जानो रघुनाथ ? ॥काँई०॥३॥
चार जणाँको राणाने भेज्या, जावो मेड़तणी-पास।
मरगी हो तो घिसाय दयो जी काला बैल जुपाय ॥काँई०॥४॥

राणा मनमें कोपिया जी, ले नंगी तलवार।
आगे झुक राणों मारण लाग्यो, महलाँमें मीरा हजार ॥काँई०॥५॥
जलमें बसे कमोदनी जी, चन्दा वसे अकाश।
जो जाहूके मन वसे जी, वो वाहूके पास ॥काँई०॥६॥
मीरा गड़से ऊतरी जी, ऊँटा-कसिया भार।
बाई छोड़्यो मेड़तो जी, पुष्कर न्हाँवा जाय ॥काँई०॥७॥
पग-बाजे मीरा घूँघरा जी, हाथोंमें करताल।
पुष्करजीके मारगाँमें, मिल गए ! गिरधरलाल ! ॥काँई०॥८॥

(५२)

एजी म्हारा नटवर नागरिया !, भगतां रे क्यूँ नहिं आयो रे ॥टेर॥
धन्ना भगतके भगति पुरबली, जिनको खेत निपायो रे।
बीज लेर साधानें बाँट्यो, बिना बीज निपजायो रे ॥ १ ॥
नामदेव थारो नानो लागै, ज्याँरो छपरो छायो रे।
मार मंडासो छावण लाग्यो लछमी बंध खिंचायो रे ॥ २ ॥
सैन भगत थारो सुसरो लागै, ज्याँरो कारज सार्‍यो रे।
बगल रछानी नाई वणगो, नृपको सीस सँवार्‍यो रे ॥ ३ ॥
परसो खाती पुरखो हूतो, ज्याँरो पैडो टूट्यो रे।
बिना बुलाये आप आयो, रात्यूँ लकड़ो कूट्यो रे ॥ ४ ॥
कबीर काँई थारो काको लागै, ज्याँ घर बालद ल्यायो रे।
खाड-खोपरा गिरी-छुहारा, आप लदा वण आयो रे ॥ ५ ॥
भिलणी काँई थारी भूवा लागै, जिनका जूठण खावै रे।
ऊँच-नीचकी काण न माने, रुच-रुच भोग लगावै रे ॥ ६ ॥

करमा काँई थारी काकी लागै, जिणरो खीचड़ खायो रे।
धावलियारो पड़दो करती, गटक-गटक गटकायो रे॥ ७॥
मीरा काँई थारी मासी हूती, जिणरा बिखरा[1] टारचा रे।
राणाँ विषरा प्याला भेज्या, विष अमृत कर डारचा रे॥ ८॥
बाल भोगको भूखो बालो, खीस खा गयो बोर रे।
नानीबाईरो माहेरो भरताँ, अब थाने आवे जोर रे॥ ९॥
पहिले तो तूँ आतो रे कान्हा, फिर-फिर सारचा काम रे।
नानीबाईरो माहेरो भरताँ, लागै घरका दाम रे॥ १०॥
कह नरसीलो सुण साँवलिया, आणो है तो आवो रे।
ब्याही सगाँमें भूंडा लाँगाँ, यूँ काँई लाज गमावो रे॥ ११॥

(५३)

तूने हीरो सो जनम गमायो, भजन बिना बावरे॥ टेर॥
ना तू आयो संताँ शरणे, ना तू हरि गुण गायो।
पचि-पचि मरचो बैलकी नाँई, सोय रह्यो उठ खायो॥ १॥
यो संसार हाट बनियेकी, सब जग सौदे आयो।
चतुर तो माल चौगुना कीना, मूरख मूल गमायो॥ २॥
यो संसार फूल सेमरको, सूवो देख लुभायो।
मारी चोंच निकल गइ रूई, शिर धुनि-धुनि पछितायो॥ ३॥
यो संसार मायाको लोभी, ममता महल चिनायो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछू नहीं आयो॥ ४॥

---

१. दुःख-संकट।

(५४)

सदा रहो अलमस्त रामकी, धुनमें हो जा मतवाला ॥
मस्त हुए प्रह्लादको देखो, खंभमें राम दिखा डाला।
उनका दुःख हरनेके कारण, नरसिंह रूप बना डाला ॥ १ ॥
मस्त हुए ध्रुवराजको देखो, बनमें विष्णु दिखा डाला।
उनका दुःख हरनेके कारण, शंख-चक्र प्रगटा डाला ॥ २ ॥
मस्त हुए तुलसीको देखो, रामायणको रच डाला।
उनका दुःख हरनेके कारण, हनुमत कलम चला डाला ॥ ३ ॥
मस्त हुए हनुमान को देखो, उरमें राम दिखा डाला।
उनका दुःख हरनेके कारण, प्रेमका पन्थ निभा डाला ॥ ४ ॥
मस्त हुए अर्जुनको देखो, प्रभुसे रथ हँकवा डाला।
उनका दुःख हरनेके कारण, गीता-ज्ञान सुना डाला ॥ ५ ॥
मस्त हुई शबरीको देखो, चुन-चुन बेर खिला डाला।
उसका दुःख हरनेके कारण, सरको अमृत बना डाला ॥ ६ ॥
मस्त हुई द्रौपदीको देखो, चीरमें श्याम रमा डाला।
उसका दुःख हरनेके कारण, वस्त्रका ढेर लगा डाला ॥ ७ ॥
मस्त हुई मीराको देखो, विषका प्याला पी डाला।
उसका दुःख हरनेके कारण, जहरको अमृत कर डाला ॥ ८ ॥

(५५)

क्षणभंगुर-जीवनकी कलिका, कल प्रातको जाने खिली न खिली।
मलयाचलकी शुचि शीतल, मन्द-सुगन्ध समीर मिली न मिली ॥
कलि काल-कुठार लिये फिरता, तन नम्रसे चोट झिली न झिली।
कह ले हरि नाम अरी रसना! फिर अन्त समयमें हिली न हिली ॥

(५६)

बुद्धि बड़ी चतुराई बड़ी, मनमें ममता अतिसय लिपटी है।
ज्ञान बड़ो धन धाम बड़ी, करतूत बड़ी, जगमें प्रगटी है॥
गज बाजी हूँ द्वार मनुष्य हजार, तो इन्द्र समानमें कौन घटी है?
सो सब विष्णुकी भक्ति बिना, मानो सुन्दर नारिकी नाक कटी है॥

(५७)

जब दाँत न थे तब दूध दियो, अब दाँत दिये तोको अन्न भी देहैं।
जलमें थलमें पशु-पक्षिनमें, सबकी सुधि लेत वो तेरीहु लैहैं॥
जानको देत अजानको देत, जहानको देत वो तोकों भी दैहैं।
रे मनमूरख! सोच करे क्यूँ, सोच करे कछु हाथ न अइहैं॥

(५८)

तिन्ह तें खर-सूकर-स्वान भले, जड़ता बस ते न कहैं कछु वै।
'तुलसी' जेहि रामसों नेहु नहीं, सो सही पसु पूँछ, विषान न द्वै॥
जननी कत भार मुई दस मास, भई किन बाँझ, गई किन च्वै?
जरि जाउ सो जीवनु, जानकीनाथ! जिये जगमें तुम्हरो बिनु ह्वै॥

(५९)

कौन कुबुद्धि भई घट अन्दर तूँ अपने प्रभुसों मन चोरै।
भूलि गयो विषयासुखमें सठ, लालच लागि रयो अति थोरै॥
ज्यों कोउ कंचन छार मिलावत, ले करि पत्थरसों नग फोरै।
सुन्दर या नरदेह अमोलक, तीर लगी नउका कत बोरै॥

(६०)

दोहा—रन बन ब्याधि-बिपत्तिमें, रहिमन मरउ न रोय।
जो रच्छक जननी-जठर, सो हरि गये न सोय॥ १॥

(६१)

समझ मन मीठा बोल, वाणीका बाण बुरा है।
वाणीसे प्रीति होय गहरी, शब्दोंसे हो जाय बैरी।
डाले कलेजा छोल, वाणीका बाण बुरा है॥ १ ॥
हीरा मानक मोती, सबहीकी कीमत होती।
वाणी है अनमोल, वाणीका बाण बुरा है॥ २ ॥

(६२)

छाँड़ि मन ! हरि-विमुखनको संग।
जिनके सँग कुबुधि उपजति है, परत भजनमें भंग॥ १ ॥
कहा होत पय पान कराये, विष नहिं तजत भुजंग।
कागहि कहा कपूर चुगाये, स्वान न्हवाये गंग॥ २ ॥
खरको कहा अरगजा लेपन, मरकत भूषन अंग।
गजको कहा न्हवाये सरिता, बहुरि धरै खहि छंग॥ ३ ॥
पाहन-पतित बाँस नहिं बेधत, रीतो करत निषंग।
'सूरदास' खल कारी कामरि, चढ़त न दूजो रंग॥ ४ ॥

(६३)

दीनानाथ दयानिधि स्वामी, कौन भाँति मैं तुम्हें रिझाऊँ॥
श्रीगंगा चरणोंसे निकली, शुचि नीर कहाँ से प्रभु लाऊँ।
कामधेनु कल्पवृक्ष तुम्हारे, कौन पदारथ भोग लगाऊँ॥ १ ॥
चार वेद तुम मुखसे भाखे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊँ।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदंग क्या शंख बजाऊँ॥ २ ॥

कोटि भानु थारे नखकी शोभा, दीपक ले प्रभु कहा दिखाऊँ।
लक्ष्मी थारे चरण की चेरी, कौन द्रव्य प्रभु भेट चढ़ाऊँ ॥ ३ ॥
तुम त्रिलोक के कर्ता हर्ता, तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊँ।
सूरश्याम प्रभु विपद् विदारण, मनवांछित प्रभु तुमहीसे पाऊँ ॥ ४ ॥

(६४)

विद्या पढ़ि करतो फिरै, औरन को अपमान।
नारायण विद्या नहीं, ताहि अविद्या जान ॥ १ ॥
निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय ॥ २ ॥
झगड़ा कबहुँ न कीजिये, सब सन रखिये प्रीति।
झगड़ेमें घर जात है, सत्य वचन परतीति ॥ ३ ॥
आवत गारी एक है, उलटत होय अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिये, वही एक की एक ॥ ४ ॥
मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।
श्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल सरीर ॥ ५ ॥
कबहुँ न भाषिय कटुबचन, बोलिय मधुर सुजान।
जेहि तें नर आदर करैं, होय जगत कल्यान ॥ ६ ॥
'तुलसी' मीठे बचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरन एक मंत्र है, तजि दे बचन कठोर ॥ ७ ॥
रोस न रसना खोलिये, बरु खोलिये तलवार।
सुनत मधुर, परिनामहित, बोलिय बचन बिचार ॥ ८ ॥
'तुलसी' या संसार में, भाँति भाँति के लोग।
सबसों हिलमिल चालिये, नदी नाव संजोग ॥ ९ ॥

क्रोध हरै सुख सांति को, अंतर प्रगट आग।
नैन बैन मुख बीगड़ै, पड़ै सील पर दाग ॥ १० ॥
लोभ सरिस अवगुन नहीं, तप नहिं सत्य समान।
तीरथ नहिं मन शुद्धि सम, विद्या सम धन आन ॥ ११ ॥
बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम अफसोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बस्यो परोस ॥ १२ ॥
सतसंगति में जाइके, मन कौं कीजै शुद्ध।
पलटू उहाँ न जाइये, उपजे जहाँ कुबुद्धि ॥ १३ ॥

(६५)

तेरा निर्मल रूप अनूप है नहीं हाड़ माँस की काया ॥
तू नहीं पंचप्राण नहीं तन है नहीं इन्द्रियाँ बुद्धि मन है।
तू तो सत् चित् आनन्द घन है।
भूला अपने रूप को कर चेत फिरे भरमाय ॥नहीं०॥
नाम रूप मिथ्या जग सारा तूँ है सत्य जगत् से न्यारा।
सभी जगत् तेरा पैसारा क्यों पड़ा भरम के कूप में।
सत्‌गुरु ने यह समझाया ॥नहीं०॥
नीराकार निर्गुण अविनाशी चेतन अमल सहज सुखरासी।
अलख निरंजन सदा उदासी तूँ व्यापक ब्रह्म स्वरूप है।
तुझमें नहीं मोह और माया ॥नहीं०॥
पारब्रह्मका लेकर शरणा ऐसा ध्यान निरंतर धरना।
हरिकृष्ण फिर होय न मरना वही अनोखा भूप है।
जो यह परमपद पाया ॥नहीं०॥

(६६)

भूल मति कृष्ण नाम रात दिन आठों याम।
याही साधनाते भवपार लंघ जावगो।
पार लंघ जावगो आनन्द मनावगो॥
मात-पिता भाइ-बन्धु जिन्हें देख भयो अन्धो।
यो तो सब झूठो धन्धो भरम भूलायो है॥
भरम भुलायो है मोह लिपटायो है।
प्राणनते प्यारी नारी रात दिन संग रहै।
वाकूँ सब दिनी जोरी जोरी की कमाइ है॥
सोउ देखि अन्तसमय द्वार लौं न लागी संग।
देखि तेरी लास प्रेत-प्रेत कह धाई है॥
मुट्ठी बाँध आयो यहाँ लायो धन गाँठ बाँधि।
पहलो कमाई सब खर्च कर डारी है॥
बड़ी कठिनाइ ते यह नरतन पायो है।
मेरी मेरी कहकर उमर गुजारी है॥
नाम जपो गुरुमंत्र सेवा करो गउ विप्र।
पाछे पछिताये कछु हाथ नहीं आवगो॥

(६७)

जगत में जीवन है दिन चार।
सुकृत कर हरिनाम सुमर ले मानुषजन्म सुधार॥
सत्य-धर्मसे करो कमाई भोगो सुख-संसार।
मातु-पिता गुरुजनकी सेवा कीजो पर-उपकार॥

पशु-पक्षी नर सब जीवनमें ईश्वर अंश निहार ।
द्वेषभाव मन से विसरावो सबसे प्रेम व्यवहार ॥
सकल जगतमें अन्दर-बाहर पूरण ब्रह्म अपार ॥
सतचित आनन्द रूप पहिचानो कर सत्संग विचार ॥
यह संसार स्वप्न की माया ममता मोह निवार ।
ब्रह्मानन्द तोड़ भव बन्धन पावो मोक्ष दुआर ॥
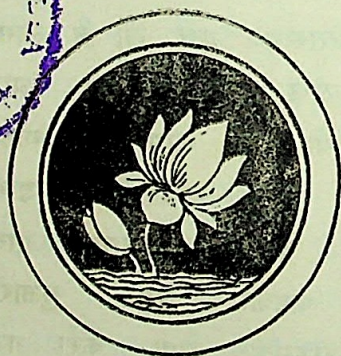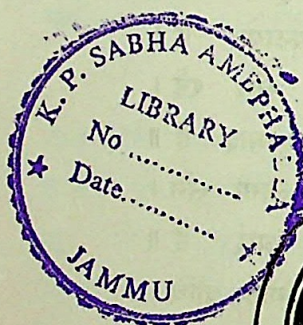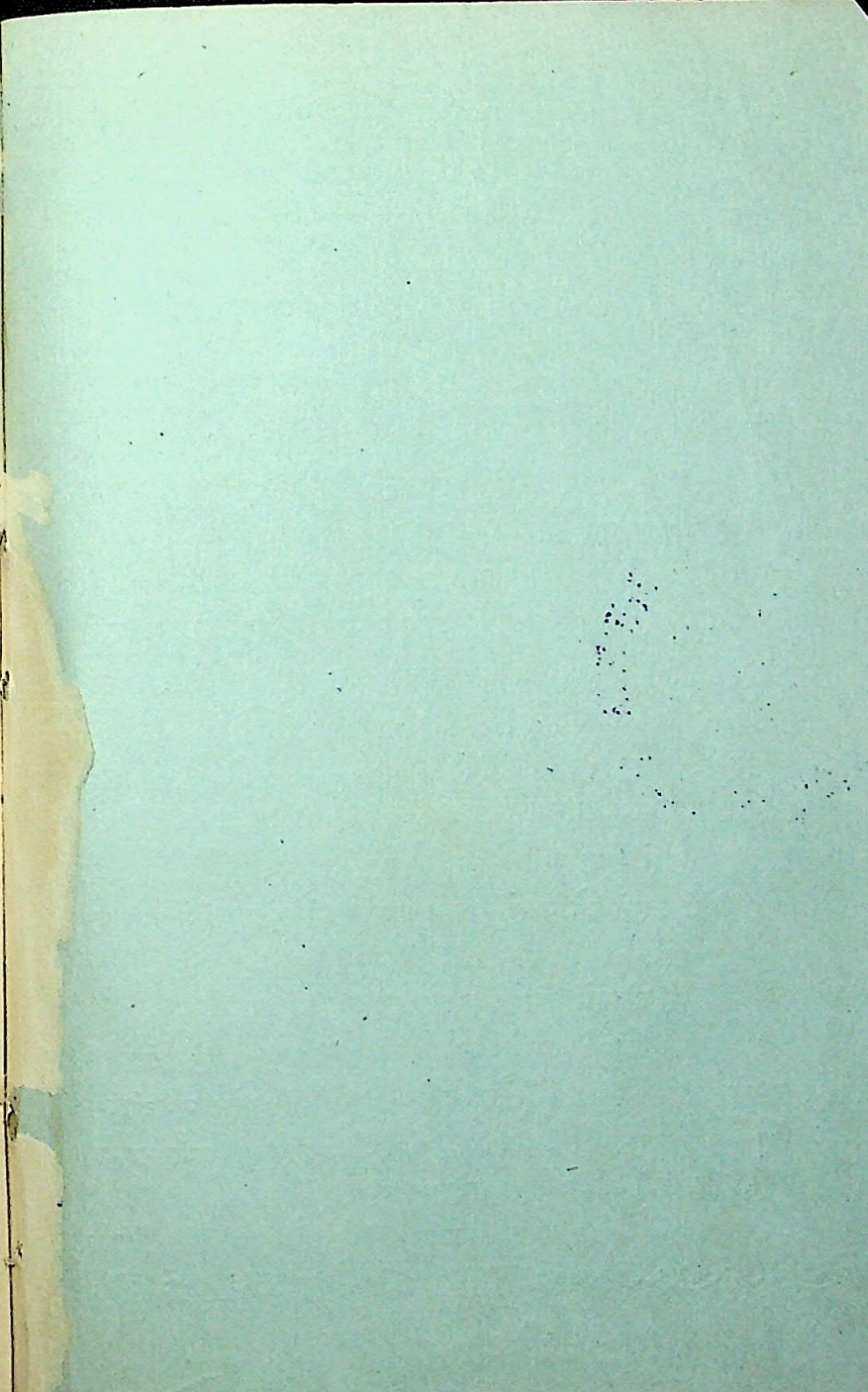
भगवत्कृपा और भगवन्नाम

भगवत्कृपा अखण्ड विश्वासपर निर्भर है और विश्वासी वही है, जो मानता है कि कोई भी चीज ऐसी नहीं है, जो भगवत्कृपामें बाधक हो सके। दैवी और आसुरी किसी भी सम्पत्तियोंमें ऐसी शक्ति नहीं है जो भगवत्कृपाको रोक दे। इसलिये भगवान्‌की पूरी शक्ति उनकी शरण ग्रहण करनेवालेको प्राप्त होती है।

मसकहिं करहिं बिरंचि प्रभु अजहि मसक ते हीन॥

भगवान् क्या नहीं कर सकते ? उन्होंने तो पुकार-पुकारकर बहुत जगह कहा है कि तुम मेरी कृपापर विश्वास कर लो, मेरे ऊपर सब भार डाल दो, कठिनाइयोंके बड़े-बड़े किले मेरी कृपासे विध्वंस हो जायँगे। मेरी कृपा तुमको ले जायगी सब कठिनाइयोंको पार करके।

भगवान् कृपा करके जिसकी ओर देख लें फिर विघ्न उसके पास भी नहीं जा सकते। सूर्यके उदय होनेपर जैसे अन्धकार अपने-आप हट जाता है, भगवान्‌की छत्रछायामें आते ही सारे प्रकाश, सारी ज्योतियाँ अपने-आप आकर इकट्ठी हो जाती हैं।

संसारमें एक ऐसी शक्ति है जिसे हम जानते नहीं, ऐसा कोई काम नहीं उससे जो न हो सके। भगवान्‌की कृपा और भगवान्‌के नामपर मेरा बहुत विश्वास है। मैंने ऐसी बहुत-सी घटनाएँ देखी हैं और मेरे जीवनमें घटी हैं।

भगवान्‌की कृपा और भगवान्‌का नाम असम्भवको भी सम्भव कर देता है। और बात मैं कहता हूँ; परंतु नामकी बात मेरा मन कहता है। नामपर विश्वास करनेवाला कभी ठगायेगा नहीं, वह कभी धोखा नहीं खायेगा।

—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार